Neo Star

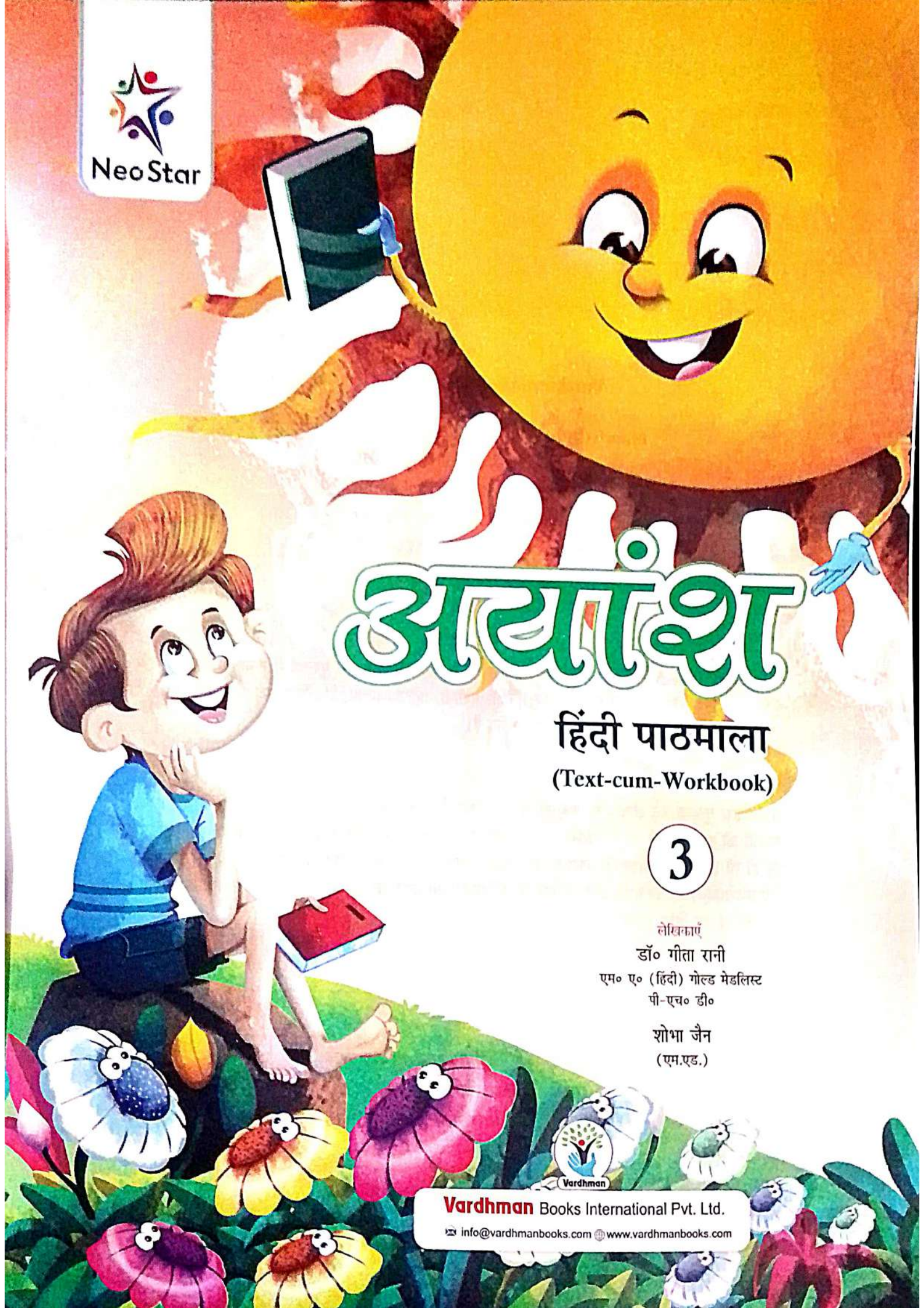

अयांश

हिंदी पाठमाला

(Text-cum-Workbook)

3

लेखिकाएं

डॉ॰ गीता रानी

एम॰ ए॰ (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट

पी-एच॰ डी॰

शोभा जैन

(एम.एड.)

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

विषय-सूची

1. हर चुनौती को सँभालें (कविता) 5
2. भावों की गोष्ठी (एकांकी) 10
   - दिन है दावत का (चित्र वर्णन) 17
3. चंदा मामा (कविता) 19
4. अपना परिचय (दैनिक प्रसंग) 23
5. आओ रचें नया इतिहास (कविता) 29

   दुष्टता का दंड (कहानी) पठन हेतु 34
6. पृथ्वी की कहानी (ज्ञान-विज्ञान) 35
7. मैं हूँ पानी (कविता) 41
8. हीरा और कोयला (एकांकी) 47
   - बकरी और सयाने बच्चे (चित्रकथा) 53
9. महकी बगिया (दैनिक प्रसंग) 55

   संगति का फल (कविता) पठन हेतु 61
10. रट्टू तोता (लोककथा) 62
11. कबीर के दोहे (दोहे) 70
12. मेरी अधूरी यात्रा (संस्मरण) 75
13. हौसले बड़े इनके (कविता) 81
14. प्यारी सिंड्रेला (कहानी) 87

    लालची बंदर (कविता) पठन हेतु 94
15. दशहरे की छुट्टियाँ (दैनिक प्रसंग) 95

    प्रश्न पत्र-I 101

    प्रश्न पत्र-II 103

1 हर चुनौती को सँभालें

क्या आप सुंदर मन को पहचानते हैं? यह व्यक्ति के कार्यों में झलकता है।

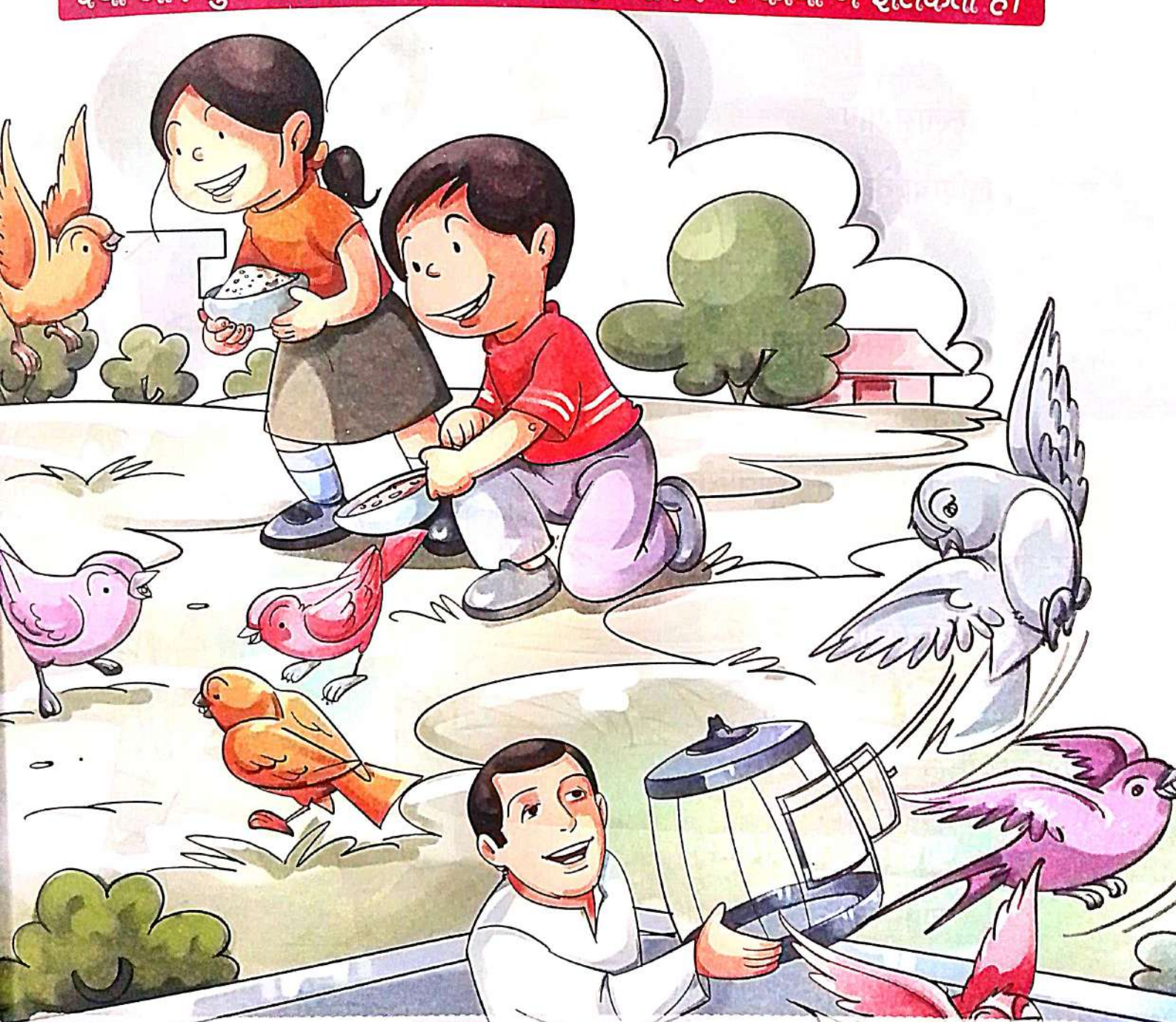

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि हमें हर चुनौती का सामना साहसपूर्वक करना चाहिए। साहस से सभी कठिनाइयों का समाधान हो जाता है।

(कविता)

- जीवन में सच्चाई से आगे बढ़ने पर हर काँटा फूल बन जाता है। इस कविता में इसी बात को कहा गया है।

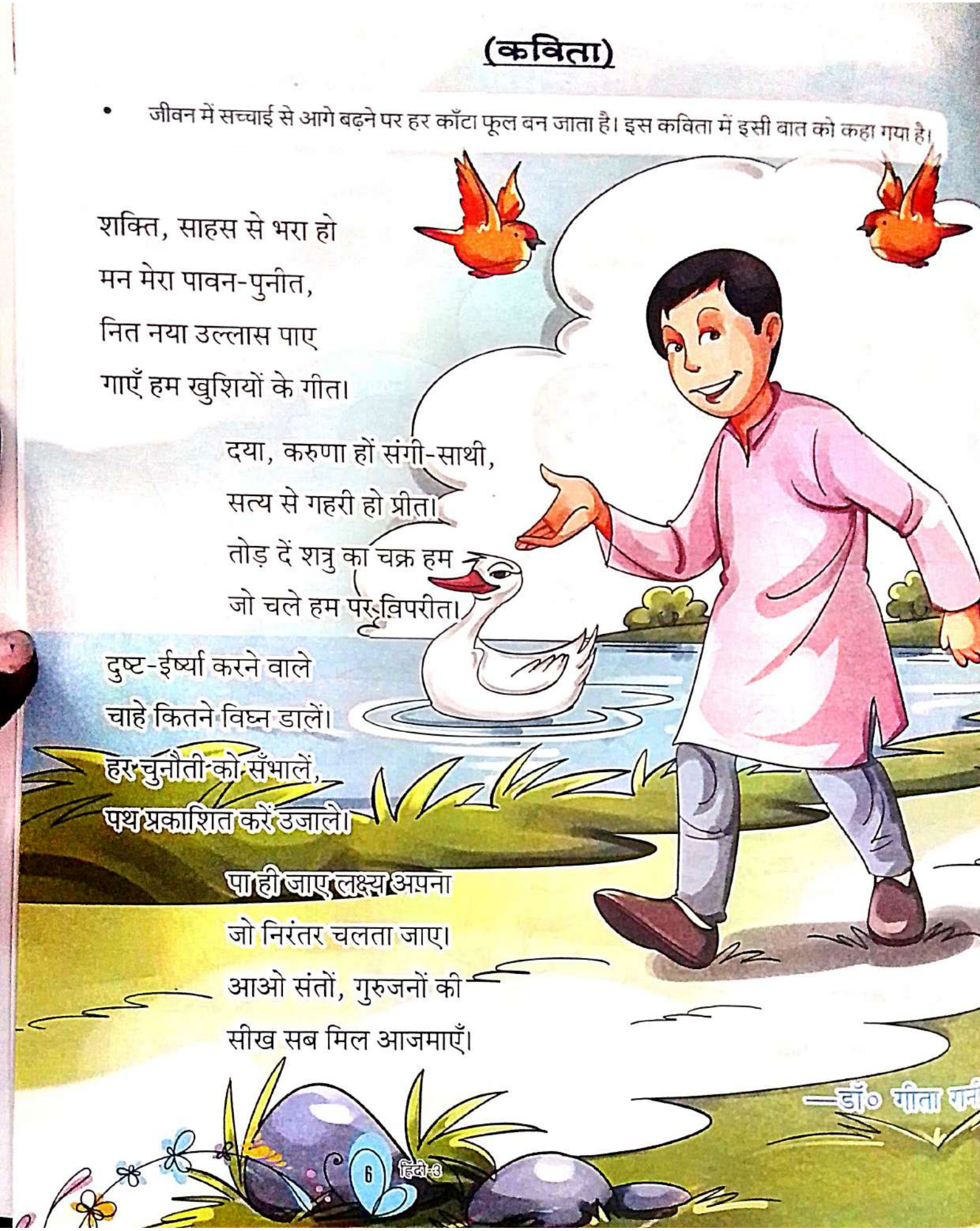

शक्ति, साहस से भरा हो
मन मेरा पावन-पुनीत,
नित नया उल्लास पाए
गाएँ हम खुशियों के गीत।

दया, करुणा हों संगी-साथी,
सत्य से गहरी हो प्रीत।
तोड़ दें शत्रु का चक्र हम
जो चले हम पर विपरीत।

दुष्ट-ईर्ष्या करने वाले
चाहे कितने विघ्न डालें।
हर चुनौती को सँभालें,
पथ प्रकाशित करें उजाले।

पा ही जाए लक्ष्य अपना
जो निरंतर चलता जाए।
आओ संतों, गुरुजनों की
सीख सब मिल आजमाएँ।

—डॉ० गीता गर्ग

शब्द–अर्थ

पावन - पवित्र; सत्य- सच; प्रीत - प्यार; उल्लास - खुशी, उमंग; विपरीत - उल्टा; चुनौती - ललकार; लक्ष्य - मंजिल; ईर्ष्या- जलन।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) मन में भरने की इच्छा की गई है–

(i) भय ( ) (ii) साहस ( )

(ख) शत्रु का चक्र चलता है–

(i) विपरीत ( ) (ii) हमारे मन के अनुसार ( )

(ग) प्रीत होनी चाहिए–

(i) सत्य से ( ) (ii) असत्य से ( )

(घ) निरंतर चलने वाला

(i) लक्ष्य भूल जाता है ( ) (ii) लक्ष्य पा लेता है ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

(क) नित नया .....।

..... गीत।

(ख) पा ही जाए .....।

..... जाएँ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कविता में कैसे गीत गाने की कामना की गई है?

.....

.....

(ख) हमारे कार्यों में विघ्न कौन डालते हैं?

.....

.....

(ग) हमारे संगी-साथी कौन होने चाहिए?

.....

.....

(घ) हमें किनकी सीख आजमानी चाहिए?

.....

.....

भाषा की बात

1. तुक मिलाओ–

(क) पुनीत – ..... (ख) सँभालें – .....

(ग) प्रीत – ..... (घ) जाए – .....

2. शब्दों को पढ़ो और समझो–

(क) प्रकाश	(i) प्रकाशित
(ख) उल्लास	(ii) उल्लसित
(ग) विस्तार	(iii) विस्तृत
(घ) सज्जा	(iv) सज्जित

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–

(क) प्रकाश	(i) असत्य
(ख) सत्य	(ii) सज्जन
(ग) खुशी	(iii) मित्र
(घ) दुष्ट	(iv) दुख
(ङ) शत्रु	(v) अंधकार

कुछ करने के लिए

- आप भी प्रतिदिन ईश्वर की वंदना करते होंगे। आप उनसे मन ही मन क्या प्रार्थना करते हो? लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- आपके परिवार में जो पूजा, व्रत, उपासना आदि होते हैं, उनका वर्णन करो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2 भावों की गोष्ठी

आपके भीतर से कौन-कौन से भाव उठते हैं?

अध्यापन संकेत

- उचित उदाहरण देते हुए बच्चों को अच्छे भावों को समझाएँ और उन्हें विकसित करने की प्रेरणा दें।

(एकांकी)

- हमारे मन में हर समय भावों की उथल-पुथल मची रहती है। आओ पढ़ें कि ये भाव अपना-अपना परिचय कैसे दे रहे हैं-

निंदा – अरे, मैं कौन हूँ? मुझे नहीं जानते, मेरा प्रयोग तो प्राय: करते हो, कहते हो न, उसमें यह दोष है, उसमें यह कमी है, यह बुराई है... उसे कुछ नहीं आता, वह कामचोर है, ढीठ है, आदि-आदि।

करुणा – तुम तो बड़ी ही दुखदाई हो। क्या तुम्हें बेचारे व्यक्ति के मन पर चोट पहुँचाते हुए शर्म नहीं आती?

निंदा – अरे, मैं क्या करूँ, जब लोगों को ही मेरे प्रयोग में कोई आपत्ति नहीं।

करुणा – तुम इसे अपनी सार्थकता मत समझो। केवल घटिया और ओछे लोग ही तुम्हें अपनाते हैं।

निंदा – पर मेरा असर तो देखो। मेरा प्रयोग जिस पर किया जाता है, उसकी हालत ऐसी हो जाती है, जैसे उस पर गोली चली हो। मुँह लटकाए, उदास घूमता है वह...।

करुणा – किसी को दुख देकर तुम्हें संतोष होता है!

निंदा – मुझे उससे क्या प्रयोजन, मैं तो बस अपनी शक्ति देख-देखकर निहाल होती हूँ।

करुणा – धिक्कार है!

निंदा – क्या कहा तुमने, अरे तुम्हारी शरण ले तो चोर हाथ छुड़ाकर भाग जाए, किसी को दंड ही न मिले...।

करुणा – अपराधी को प्रेम से भी सुधारा जा सकता है। तुम शायद जानती नहीं कि मैं महापुरुषों की प्रिय रही हूँ। मेरे ही कारण जीसस ने अपने हत्यारों को भी क्षमा कर दिया। महर्षि दयानंद ने उन्हें विष देने वाले को भी बिना दंड दिए छोड़ दिया।

निंदा – क्या सचमुच? (तभी ईर्ष्या का प्रवेश)

ईर्ष्या – बहन निंदा कैसी हो? अरे, यह सफ़ेद साड़ी वाली कौन है?

निंदा – यह करुणा है, कहती है कि यह हम दोनों की विरोधी है। जहाँ हम दोनों होते हैं, वहाँ यह नहीं रह पाती।

ईर्ष्या – ओह, इसके इतने नखरे!

करुणा – दरअसल तुम्हारा और मेरा काम बिलकुल अलग-अलग है। तुम घाव देती हो और मैं मरहम।

क्षमा – हाँ बहन, मेरा काम भी तुम्हारे जैसा है, पर आश्चर्य कि फिर भी लोग मुझे अपनाते हुए झिझकते हैं। (तभी ज़ोर से गर्जना)

अहंकार – इसका कारण हूँ मैं। मैं इंसान को जब जकड़ लेता हूँ तो वह मेरी पकड़ से छूट नहीं पाता। वह खुद को हमेशा सही, ऊँचा और महान समझता है।

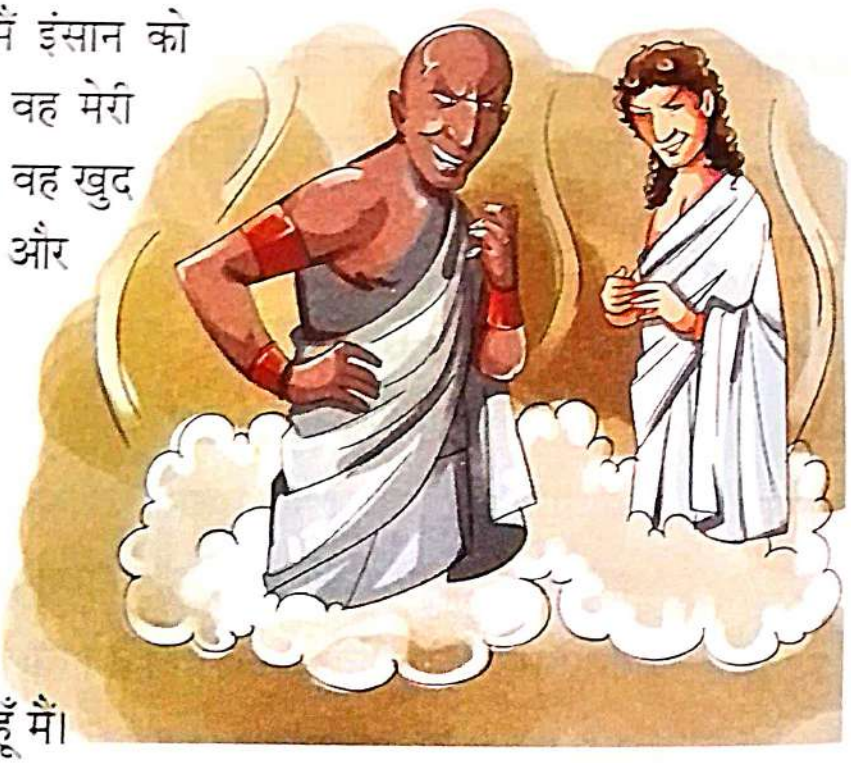

क्रोध – और मैं हूँ तुम्हारा मित्र। मेरे आने से मुँह तमतमा जाता है, खून में मानों उबाल आ जाता है। चारों ओर आग बरसाता हूँ मैं।

प्रेम – और मैं उस आग पर पानी बनकर बरस जाता हूँ। जहाँ मैं रहता हूँ, वहीं स्वर्ग होता है। भले ही व्यक्ति के पास धन कम हो, पर यदि मैं उसके पास हूँ तो वह सुख का अनुभव करता है। (बच्चो, आप अपने मन को टटोलें कि आपके अंदर कौन-कौन से भाव हैं?)

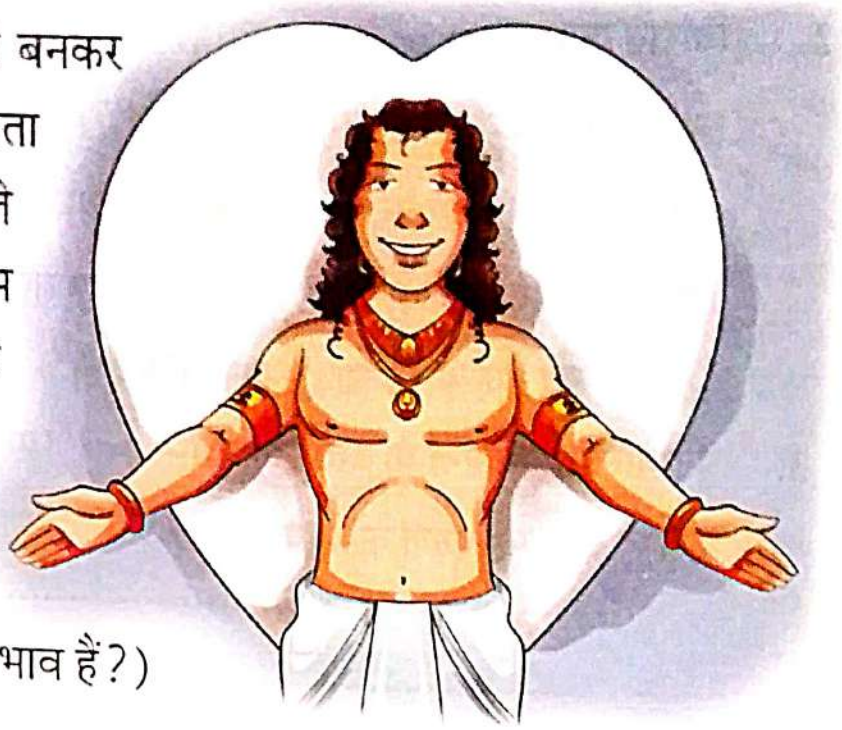

शब्द-अर्थ

प्रयोग - इस्तेमाल; दोष - अवगुण; दुखदाई - दुख देने वाला; आपत्ति - मनाही; कामचोर - काम से जी चुराने वाला; सार्थकता - उपयोगी।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) दूसरों को कामचोर कहना–

(i) प्रशंसा है ( ) (ii) निंदा है ( )

(ख) निंदा को पाठ में बताया गया है–

(i) दुखदाई ( ) (ii) सुखदाई ( )

(ग) करुणा ने निंदा को कहा–

(i) नमस्कार है ( ) (ii) धिक्कार है ( )

(घ) प्रेम जहाँ रहता है, वहाँ

(i) स्वर्ग होता है ( ) (ii) नरक होता है ( )

2. किसने कहा–

(क) "मेरे आने से मुँह तमतमा जाता है।" .....

(ख) "मैं उस आग पर पानी बनकर बरस जाता हूँ।" .....

(ग) "अपराधी को प्रेम से भी सुधारा जा सकता है।" .....

(घ) "अरे, यह सफ़ेद साड़ी वाली कौन है?" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कौन महापुरुषों को प्रिय रही है?

.....

.....

(ख) जिसकी निंदा की जाती है, उसकी हालत कैसी हो जाती है?

.....

.....

(ग) निंदा को कैसे लोग अपनाते हैं?

.....

.....

(घ) अहंकार ने अपने विषय में क्या कहा?

.....

.....

भाषा की बात

1. विशेषण शब्दों के आगे ✓ लगाओ–

(क) क्रोध ( ) क्रोधी ( ) दया ( ) क्षमा ( )

(ख) ईर्ष्यालु ( ) कपट ( ) बैर ( ) करुणा ( )

(ग) प्रेम ( ) अहंकारी ( ) विचार ( ) हृदय ( )

(घ) मैत्री ( ) विद्वान ( ) दयालु ( ) स्नेह ( )

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखो–

(क) उसे बड़ी क्रोध आती है।

.....

(ख) हमें पक्षियों पर करुणा करना चाहिए।

.....

(ग) चूहा सबका नुकसान करती है।

.....

(घ) हमें किसी का अपमान नहीं करनी चाहिए।

.....

3. समान अर्थ वाले शब्दों के जोड़े बनाकर लिखो–

प्रेम, क्रोध, ईर्ष्या, आशा, घृणा, उम्मीद, जलन, प्यार, गुस्सा, नफ़रत

.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यावाची शब्द लिखिए–

(क) अहंकार – ....

(ख) आग – ....

(ग) पानी – ....

(घ) व्यक्ति – ....

कुछ करने के लिए

- **नीचे दिए गए शब्दों को सही कॉलम के नीचे लिखो–**

मित्रता, सेवा, परोपकार, झगड़ा, हिंसा, शत्रुता, दया, क्षमा, निंदा, चोरी, लालच, क्रोध, चुगली, सहानुभुति, वीरता, नम्रता

अच्छे भाव	बुरे भाव

- **ये क्यों प्रसिद्ध हैं–**

''सत्य,''प्रेम''व''अहिंसा''के''लिए''

.....

.....

.....

दिन है दावत का

(चित्र वर्णन)

अध्यापन संकेत

- बच्चों को चित्र ध्यानपूर्वक देखने को कहें और फिर पूछें कि कौन क्या-क्या काम कर रहा है?

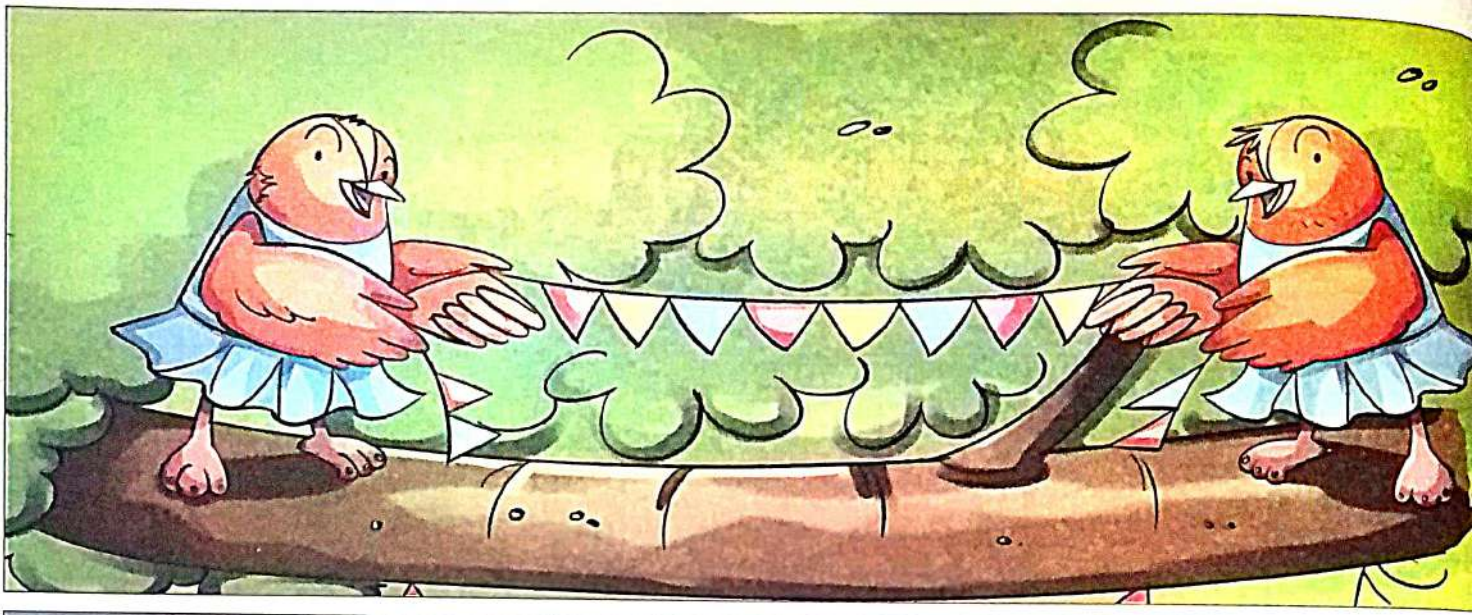

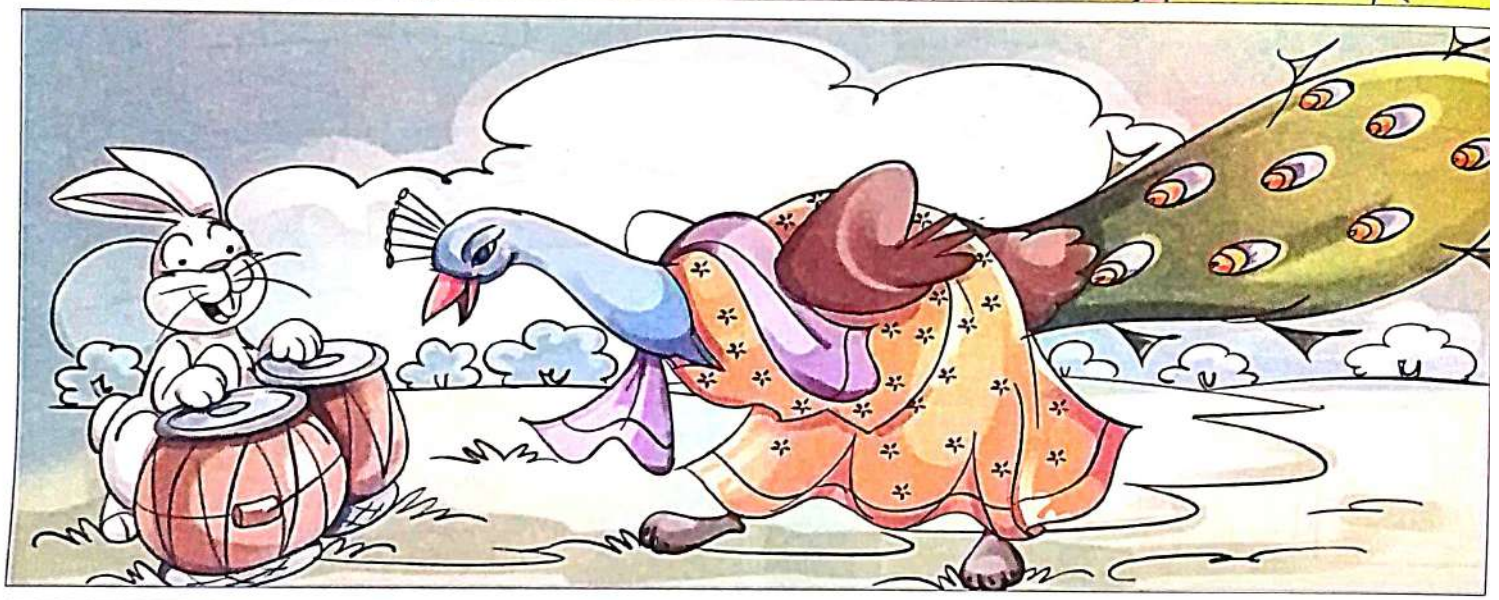

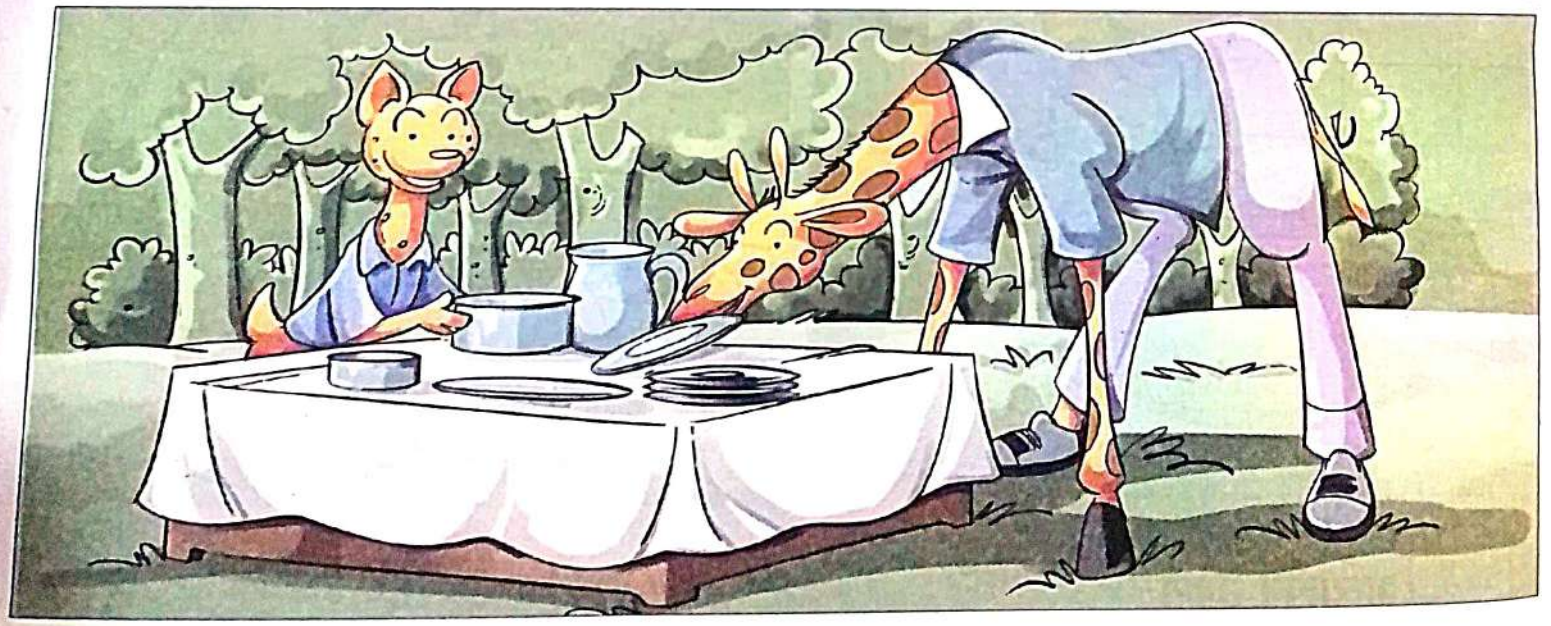

आज की छुट्टी खूब मनेंगी।

3 चंदा मामा

यदि कभी चाँद आपके घर आ जाए तो आप उसके लिए क्या-क्या करेंगे?

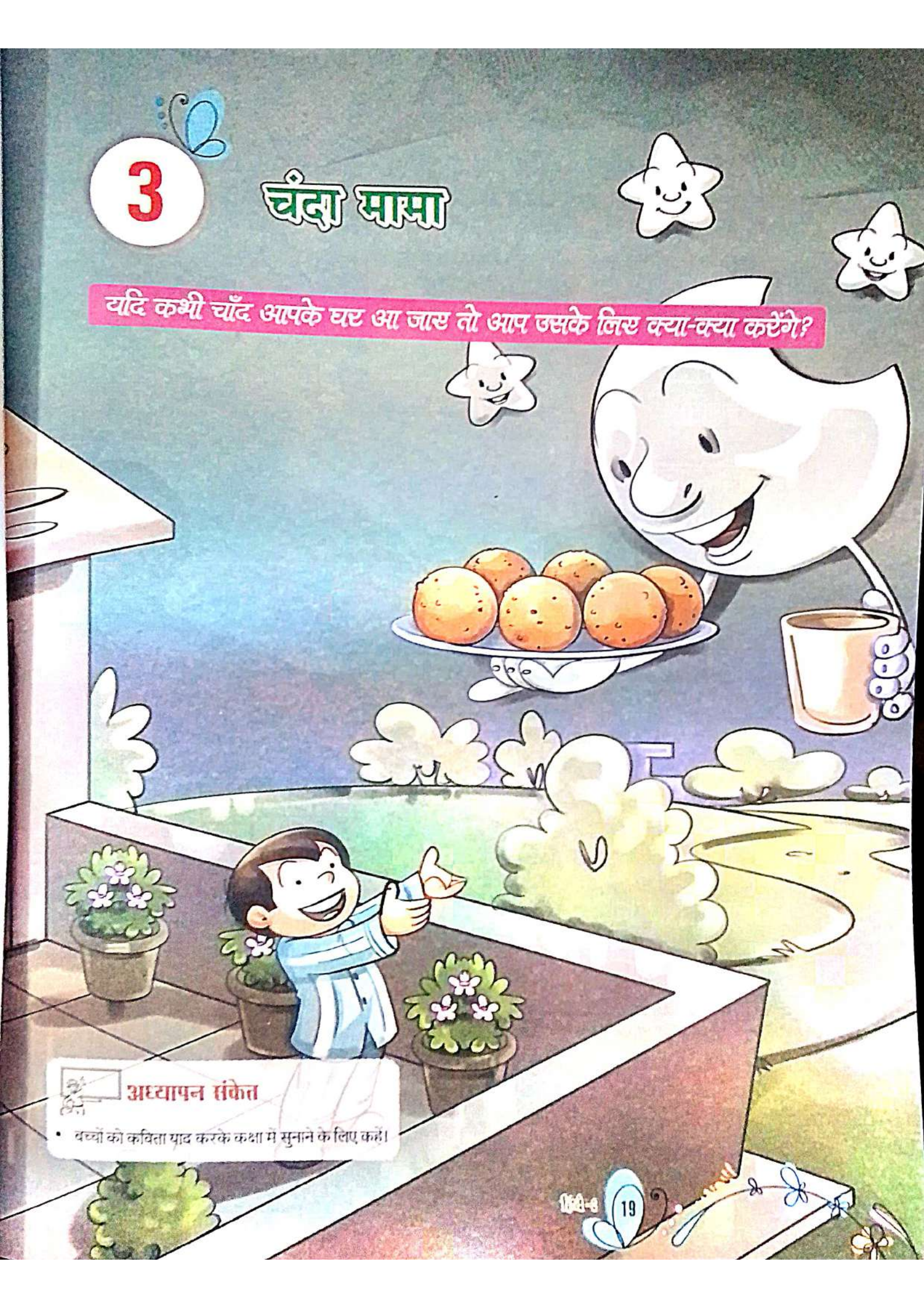

अध्यापन संकेत

- बच्चों को कविता याद करके कक्षा में सुनाने के लिए कहें।

(कविता)

- हम सब बचपन में चाँद को मामा कहते थे। चाँद को मामा मानकर बहुत-सी कविताएँ लिखी गई हैं। उनमें से ही एक कविता नीचे दी गई है।

चंदा मामा, चंदा मामा,
जैसे ही होती है रात,
आसमान में आ जाते हो,
तारों की सेना के साथ।

पर जैसे ही हुआ सवेरा,
कहाँ चले तुम जाते हो?
क्या सूरज से डर लगता है?
जो डरकर छिप जाते हो।

चंदा बोला– "रात-रात भर
घूम-घूम थक जाता हूँ,
इसलिए जब आता सूरज
मैं घर जाकर सो जाता हूँ।"

आसमान में ही रहते हो
कभी उतरकर नीचे आओ।
कितनी सुंदर है यह पृथ्वी
मामा! इसे देखकर जाओ।

जिस दिन भी तुम नीचे आओ,
तो मेरे घर भी ज़रूर आना।
मम्मी खुश हो जाएँगी।
दूध-जलेबी खाकर जाना।

शब्द–अर्थ

चंदा- चाँद; डर - भय; खुश - प्रसन्न; पृथ्वी- धरती; आसमान - आकाश; सुंदर - खूबसूरत; अवश्य - ज़रूर।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) चंदा रात में आता है–

(i) देवों की सेना के साथ ( ) (ii) तारों की सेना के साथ ( )

(ख) चंदा सूरज के आने पर चला जाता है–

(i) सोने ( ) (ii) खेलने ( )

(ग) कविता में सुंदर कहा गया है–

(i) पृथ्वी को ( ) (ii) सूरज को ( )

(घ) चंदा को खाने के लिए कहा है–

(i) बरफी ( ) (ii) दूध-जलेबी ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

(क) पर जैसे ही ..... ?
..... छिप जाते हो।

(ख) आसमान में ही ..... ।
..... देखकर जाओ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) कविता में किसका वर्णन किया गया है?

.....

.....

(ख) क्या चाँद को सूरज से डर लगता है?

.....

.....

(ग) चाँद ने उत्तर में क्या कहा?

.....

.....

(घ) बच्चा चाँद को कहाँ बुला रहा है?

.....

.....

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों को उनके समान अर्थ वाले शब्दों से मिलाओ–

(क) रात	(i) भय
(ख) सवेरा	(ii) खूबसूरत
(ग) डर	(iii) रात्रि
(घ) सुंदर	(iv) सुबह

2. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यावाची लिखो–

(क) सूरज – ....

(ख) चाँद – ....

(ग) पृथ्वी – ....

(घ) आसमान – ....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- सोचिए, रात में चाँद की तरह और क्या-क्या चमकता है?
- क्या चाँद प्रतिदिन एक ही आकार का दिखाई पड़ता है? चाँद के अलग-अलग रूपों के चित्र बनाकर ड्राइंग शीट पर चिपकाओ।

4 अपना परिचय

'जान है तो जहान है'. इस बात का अर्थ क्या आप जानते हैं? इसका अर्थ है कि यदि आप स्वस्थ हैं, तो संसार में आपके लिए सब कुछ है।

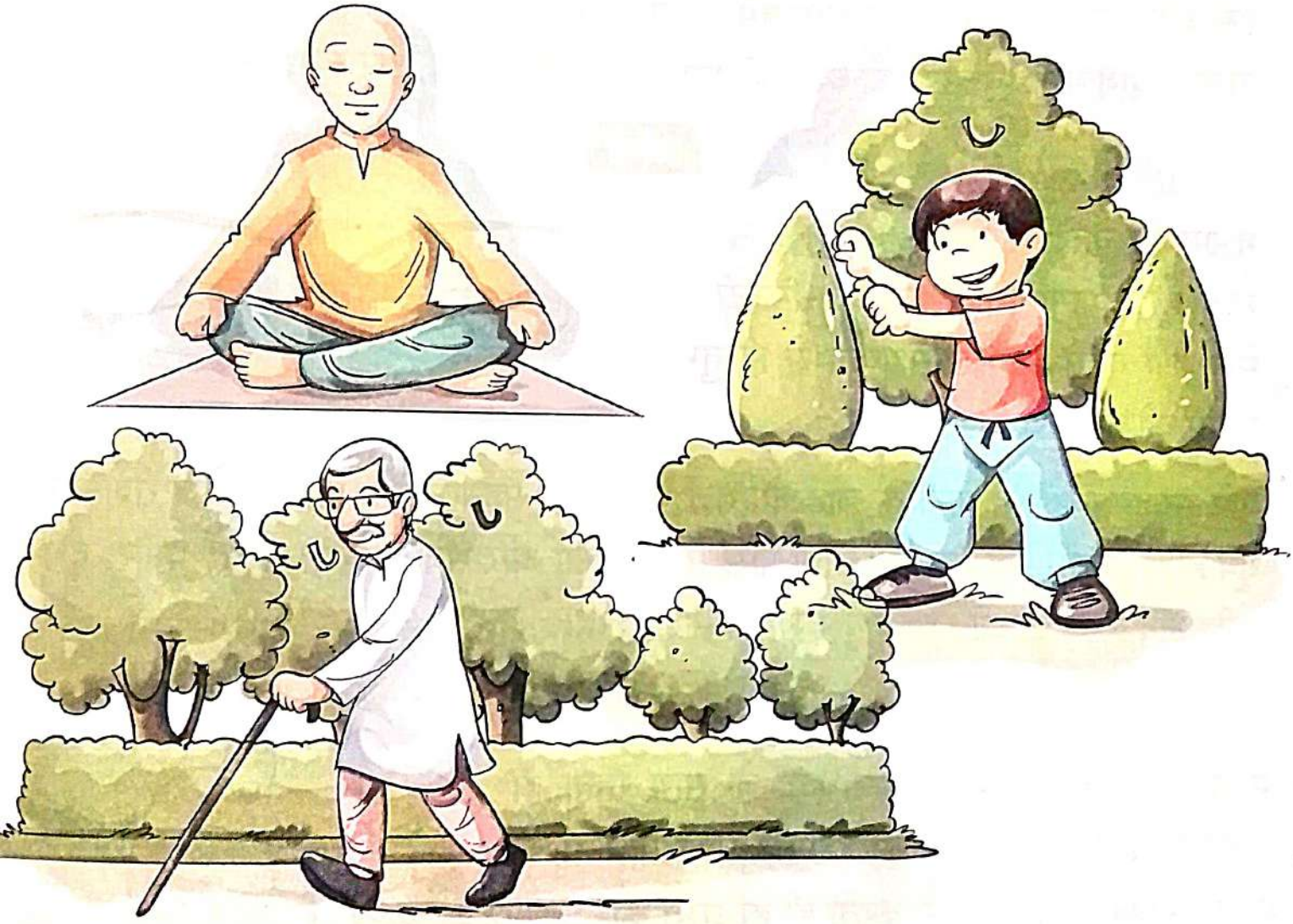

अध्यापन संकेत

- विद्यार्थियों को बताएँ कि किस प्रकार शरीर का ध्यान रखना आवश्यक है। स्वस्थ रहना जीवन की एक ऐसी स्थिति है, जिसे कायम रखना हमारा कर्तव्य है।

(दैनिक प्रसंग)

- हम सबके पास शरीर है, पर इसे कैसे स्वस्थ रखना है, ये बात हम प्रायः नहीं जानते। यहाँ इसी बात की जानका दी गई है।

हमारा शरीर एक अद्‌भुत मशीन की भाँति है। इसके द्‌वारा हम अनेक क्रियाएँ करते हैं; जै चलना, दौड़ना, देखना-सुनना, खाना-पीना आदि।

इस शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें इसे पौष्टिक भोजन तो देना ही पड़ता है, पर साथ ह उचित व्यायाम व स्वच्छता का ध्यान भी रखना पड़ता है। आओ, इसे समझें—

आँखें

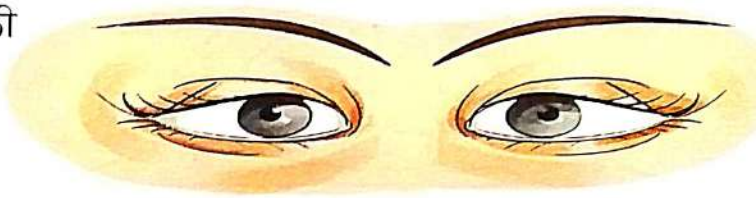

मैं आपके चेहरे पर सजती हूँ। पलकों से ढकी रहती हूँ। ये मानों परदे हैं, जो धूल-मिट्‌टी से मेरी रक्षा करते हैं। मेरी सहायता से ही तुम संसार की हर चीज़ देख पाते हो।

मुझे सुबह-सुबह ठंडे पानी के छींटें दो। तेज़ धूप मुझसे सहन नहीं होती। जब तेज़ रोशनी या धूप हो, तो बाहर मत निकलो। टीवी पास से मत देखो और सेब-अनार, गाजर, पनीर, दूध-दही आदि ज़रूर खाओ, ताकि मुझे शक्ति मिलती रहे।

दाँत

मैं तुम्हारे मुख में अपने भाई-बंधुओं के साथ रहता हूँ। तुम्हारे चेहरे को आकार देने, हँसी से सजाने के साथ-साथ मैं भोजन चबाने के कार्य को करता हूँ। हर वस्तु को टुकड़े-टुकड़े कर डालना मेरा काम है, ताकि वह सरलता से गले के नीचे उतर सके। मुझे साफ़-सफ़ाई पसंद है, यदि कोई मुझे गंदा रखता है, तो मेरी जान

जोखिम में पड़ जाती है, मैं सड़ने लगता हूँ। अत: ब्रश से मुझे अच्छी तरह साफ़ करना चाहिए। संतरा, कच्चे फल व कैल्शियम आदि से मैं स्वस्थ रहता हूँ।

मस्तिष्क

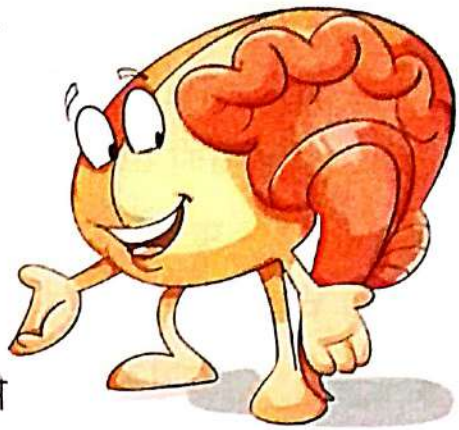

मैं आपका मस्तिष्क हूँ, सिर के अंदर मैं एक अद्‌भुत कंप्यूटर की तरह काम करता हूँ। सारे शरीर को विविध संदेश मेरे द्‌वारा ही भेजे जाते हैं। मैं ही स्मरण शक्ति का भंडार हूँ। मुझे पूरी नींद मिलनी आवश्यक है, जैसे मोबाइल फोन को आप चार्ज करते हैं, वैसे ही नींद से मैं शक्ति पाता हूँ। मैं हर दृश्य, हर बात को, जिसे आप कहते, सुनते, देखते हैं, अपने भीतर रख लेता हूँ। अच्छे विचारों से ही मैं स्वच्छ बना रहता हूँ। हाँ, पौष्टिक भोजन, फल, मेवे आदि मुझे बलवान बनाते हैं।

पेट

मैं हूँ पेट। आप जो भी खाते-पीते हैं, सब मेरे अंदर जमा होता है फिर मैं उस भोजन से शक्ति बनाकर पूरे शरीर को देता हूँ।

हाँ, तेज़ मिर्च-मसाले, घी, तेल, मादक पदार्थ मेरे लिए हानिकारक हैं। साफ़-सुथरा ताज़ा पौष्टिक भोजन मुझे स्वस्थ रखता है।

शब्द-अर्थ

क्रियाएँ - काम; स्वच्छता - सफ़ाई; पौष्टिक - सेहतमंद; जोखिम - खतरा; मादक पदार्थ - नशीले द्रव्य।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ– (आलोचनात्मक चिंतन)

(क) शरीर है एक–

(i) पेड़ की तरह ( ) (ii) मशीन की तरह ( )

(ख) आँखें ढकी रहती हैं–

(i) पलकों से ( ) (ii) भौंहों से ( )

(ग) मस्तिष्क होता है–

(i) बैटरी की तरह ( ) (ii) कंप्यूटर की तरह ( )

(घ) पेट के लिए हानिकारक हैं–

(i) मादक पदार्थ ( ) (ii) खट्टे फल ( )

2. किसने कहा–

(क) "हर वस्तु को टुकड़े-टुकड़े कर डालना मेरा काम है।" ....

(ख) "मुझे सुबह-सुबह ठंडे पानी के छींटे दो।" ....

(ग) "सिर के अंदर मैं एक अद्भुत कंप्यूटर की तरह काम करता हूँ।" ....

(घ) "मैं भोजन से शक्ति बनाकर पूरे शरीर को देता हूँ।" ....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) धूल-मिट्टी से आँखों की रक्षा कौन करता है?

....

....

(ख) दाँतों का क्या कार्य है?

....

....

(ग) सारे शरीर को विविध संदेश कौन भेजता है?

.....

.....

(घ) कौन भोजन से शक्ति बनाकर सारे शरीर को देता है?

.....

.....

1. विशेषण का विशेष्य से मिलान करो–

(क) ताज़ा	(i) शरीर
(ख) स्वस्थ	(ii) वाणी
(ग) कड़वी	(iii) हवा
(घ) ठंडी	(iv) पदार्थ
(ङ) मादक	(v) भोजन

2. निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करके लिखो–

(क) पौशटिक – .....

(ख) शकती – .....

(ग) वीवीध – .....

(घ) समरण – .....

3. पढ़ो और समझो–

(क) सेहत, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।

(ख) ताकत, शक्ति, बल।

(ग) जोखिम, खतरा, विपत्ति।

(घ) व्यायाम, वर्जिश, कसरत।

कुछ करने के लिए

- आप स्वस्थ रहने के लिए क्या करते हैं? वर्णन करो।

.....

.....

.....

- नीचे दिए गए शब्दों को सही शीर्षक के नीचे लिखो–

चमकीले दाँत, झुकी कमर, मुरझाई त्वचा, तेज़ नज़र, पीले दाँत, चेहरे पर हलकी लाली, चमकीले बाल, चमकती त्वचा

स्वस्थ शरीर	रोगी शरीर
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

- पता लगाओ–

हमें स्वस्थ रहने के लिए कौन-कौन से विटामिनों की आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

5 आओ रचें नया इतिहास

हमें ईर्ष्या-द्वेष भूलकर आपस में प्रेम तथा त्याग का व्यवहार करना चाहिए।

अध्यापन संकेत

- बच्चों को आपस में प्रेम से रहना सिखाएँ तभी सभी का जीवन सुखी और प्रसन्नता से भरपूर होगा।

(कविता)

- हमे जो जीवन मिला है, उसमे किस प्रकार विशेष बदलाव करके उसे उच्च बनाया जा सकता है? इस कवि यही बात कही गई है—

आओ रचें नया इतिहास
जाने इसमें क्या होगा खास।
इसमे घृणा का विष न होगा,
बैर की न होगी कोई बात।
हर प्राणी का हर साथी पर
होगा पूर्ण अडिग विश्वास।

दंभ और पाखंड न होंगे,
दया, क्षमा के भाव सजेंगे।
उन्नति-भौतिक के संग-संग
अंतरमन की फैली होगी सुवास।

कोई किसी का दमन न करके
देगा सबको आदर-सम्मान।
हिंसा से सब दूर रहेंगे,
मिलजुल कर सुख-दुख बाँटेंगे।

व्यर्थ समय न खोएगा कोई
द्वेष की फसल न जाएगी बोई।
कोई किसी का दास न होगा
तब कोई भी उदास न होगा।

(कविता)

- हमें जो जीवन मिला है, उसमें किस प्रकार विशेष बदलाव करके उसे उच्च बनाया जा सकता है? इस कवि यही बात कही गई है—

आओ रचें नया इतिहास
जानें इसमें क्या होगा खास।
इसमें घृणा का विष न होगा,
बैर की न होगी कोई बात।
हर प्राणी का हर साथी पर
होगा पूर्ण अडिग विश्वास।

दंभ और पाखंड न होंगे,
दया, क्षमा के भाव सजेंगे।
उन्नति-भौतिक के संग-संग
अंतरमन की फैली होगी सुवास।

कोई किसी का दमन न करके
देगा सबको आदर-सम्मान।
हिंसा से सब दूर रहेंगे,
मिलजुल कर सुख-दुख बाँटेंगे।

व्यर्थ समय न खोएगा कोई
द्वेष की फसल न जाएगी बोई।
कोई किसी का दास न होगा
तब कोई भी उदास न होगा।

बोलो ऐसा होगा कैसे
जब मन में जागे भाव ये सब
मैं नहीं भिन्न दूसरे जन से
जब सबको यह होगा ज्ञान
काश बनो सब ऐसे विद्वान।

—डॉ० गीता रानी

शब्द-अर्थ

अडिग - स्थिर, दृढ़; सुवास - खुशबू; दमन - दबाना; दास - गुलाम; द्वेष - बैर; भिन्न - अलग; विद्वान - ज्ञान से युक्त; खास - विशेष।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) नए युग में नहीं होगी–

(i) रोशनी ( ) (ii) घृणा ( )

(ख) नए युग में प्रत्येक दूसरे पर रखेगा–

(i) विश्वास ( ) (ii) संदेह ( )

(ग) नए युग में कामना की गई है कि सभी एक-दूसरे को–

(i) अपने समान समझे ( ) (ii) गैर समझे ( )

(घ) जीवन को सजाने के लिए भाव होंगे–

(i) दया और क्षमा ( ) (ii) दंभ और पाखंड ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) नया क्या रचना है?

.....

.....

(ख) नए इतिहास में क्या खास होगा?

.....

.....

(ग) नए युग में लोग किससे दूर रहेंगे?

.....

.....

(घ) कविता में जो कल्पना की गई है, वह कब पूरी हो पाएगी?

.....

.....

(ङ) कविता में कैसी सुवास (खुशबू) फैलने की बात कही गई है?

.....

.....

3. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

(क) कोई किसी का .....।

..... आदर-सम्मान।

हिंसा से .....।

..... सुख-दुख बाँटेंगे।

(ख) दंभ और .....।

..... भाव सजेंगे।

उन्नति- .....।

..... होगी सुवास।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

(क) दया .....

(ख) आदर .....

(ग) उदास .....

(घ) विश्वास .....

2. निम्नलिखित शब्दों का उनके समानार्थी शब्दों से मिलान करो–

(क) सुवास	(i) गुलाम
(ख) दास	(ii) प्रगति
(ग) उन्नति	(iii) कपट
(घ) पाखंड	(iv) बेकार
(ङ) व्यर्थ	(v) सुगंध

3. निम्नलिखित को अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) सुगंध फैलाना – .....

(ख) पूजनीय – .....

(ग) आदरणीय – .....

(घ) नाम रोशन करना – .....

(ङ) विद्वान – .....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- आप भी अपनी कल्पना में एक नई दुनिया बनाना चाहते होंगे। आप कैसी दुनिया बनाना चाहते हैं? वर्णन करो।
- दी गई कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।

दुष्टता का दंड

(कहानी) (पठन हेतु)

- कुछ लोग दुष्टता दिखाना गर्व की बात समझते है, किंतु जब उन्हें इस बात का दंड मिलता है, तब उन्हें समझ आती है कि ऐसा करना अनुचित है। यही इस प्रसंग में बताया गया है।

एक बार की बात है, किसी गाँव में श्याम नाम का एक लड़का रहता था। वह बहुत ही शरारती था। जब भी वह घर से कही बाहर निकलता, तो वह अपने हाथ में एक डंडा या कोई पत्थर ज़रूर रखता था। वह उस डंडे से किसी भी छोटे लड़के या लड़की को पीट देता था। वह अपने सामने से गुज़रने वाले किसी भी कुत्ते या बिल्ली को भी डंडे से पीट देता था या पत्थर मारता । उसके इसी व्यवहार से गली के सभी छोटे बच्चे बहुत ही तंग थे। वे सभी उससे बहुत डरते थे। इसलिए, जब भी उन्हें श्याम दिखाई देता था, तो वे सभी छिप जाते थे। एक दिन जब श्याम अपने घर से निकला, तो उसके हाथ में वही डंडा था। वह अपने शरारती स्वभाव के कारण अकड़-अकड़कर चलता हुआ एक चौक में आ पहुँचा। उसी दिन उसने एक आवारा कुत्ते को ज़ोर से डंडा मार दिया। उस कुत्ते ने तुरंत लपककर श्याम को काट लिया। श्याम ज़ोर से चिल्लाने लगा। लोगों ने बड़ी ही मुश्किल से उसे कुत्ते से छुड़ाया।

तभी वहाँ पर एक अन्य लड़का आया और बोला, "क्यों श्याम, तुम्हें अपनी शरारत का फल मिल गया। आगे भी शरारत करोगे, तो इससे भी बुरी चोट खाओगे।"

श्याम ने रोते हुए कहा, "मैं आप सबसे क्षमा माँगता हूँ, आज के बाद कोई शरारत नहीं करूँगा।" उसी दिन से श्याम एक अच्छा लड़का बन गया। सब लोग उससे बहुत प्यार करने लगे।

6 पृथ्वी की कहानी

हमारी पृथ्वी सभी जीव-जंतुओं का घर हैं। हम सभी को इसकी देखभाल ध्यानपूर्वक करनी चाहिए।

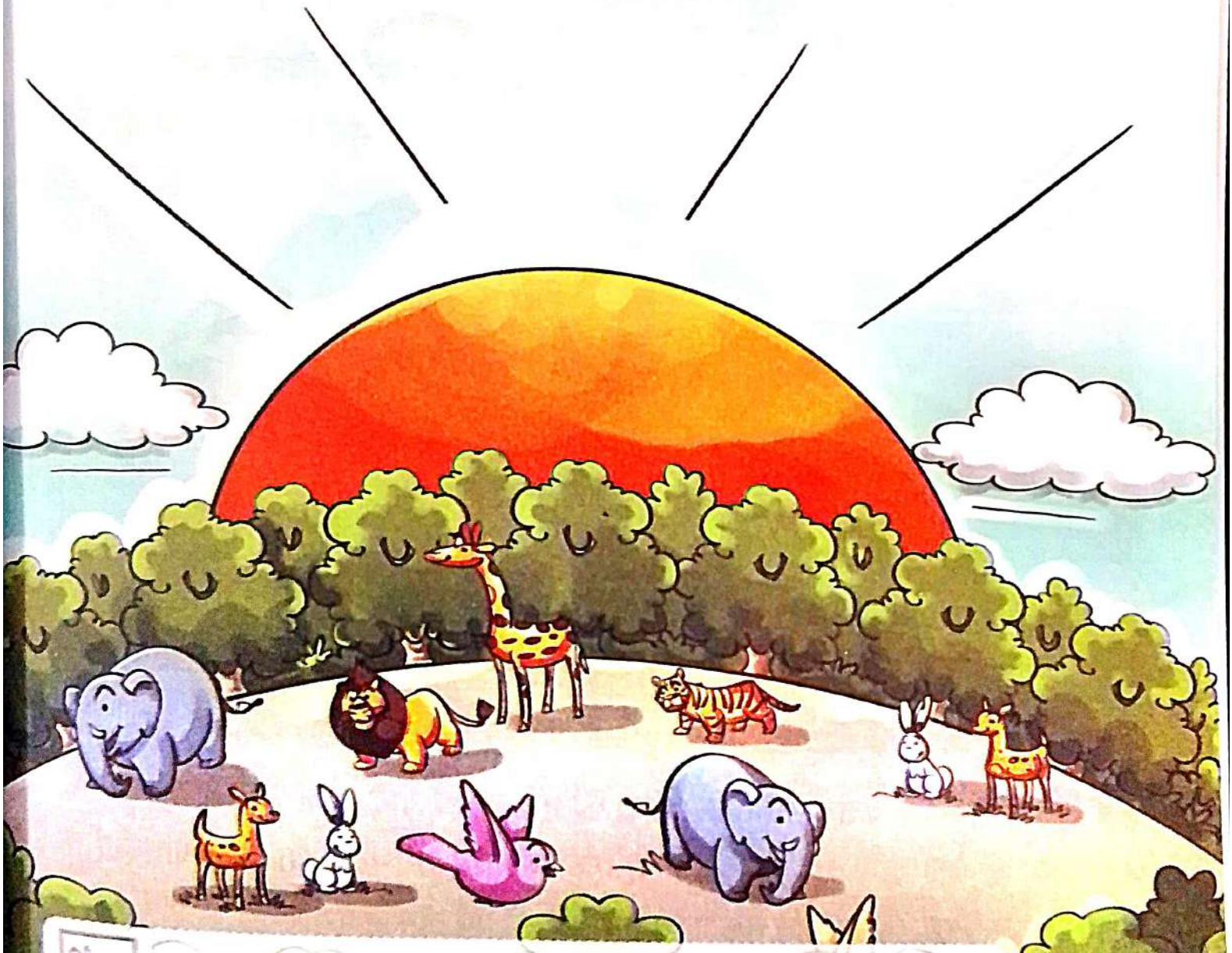

अध्यापन संकेत

- यह पाठ पढ़ाते हुए बच्चों को बीच-बीच में पृथ्वी के बारे में रोचक जानकारी देते जाएँ तथा उनसे प्रश्न भी पूछे।

(ज्ञान-विज्ञान)

- पृथ्वी की उत्पत्ति के विषय में जानने की जिज्ञासा सभी मनुष्यों में होती है। इसी के बारे में इस पाठ में बताया गया है।

हम सब पृथ्वी पर पैदा हुए हैं। पृथ्वी कैसे बनी? आज तो केवल इसका अनुमान ही लगाया जा सकता है, क्योंकि जब यह बनी थी, तो कोई भी प्राणी नहीं था। किसी ने भी इसको बनते हुए नहीं देखा। वैज्ञानिकों का विचार है कि करोड़ों वर्ष पूर्व एक टुकड़ा किसी कारणवश सूर्य से टूटकर अलग हो गया था। अलग होने के पश्चात् वह सूर्य के चारों ओर चक्कर काटने लगा और तब से आज तक यह टुकड़ा इसके चारों ओर घूम रहा है। सूर्य के चारों ओर चक्कर काटने वाले को ग्रह कहते हैं। ग्रह आठ हैं। पृथ्वी भी उनमें से एक है। सौर मंडल के ग्रहों के नाम हैं- बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, अरुण और वरुण। ये सब सूर्य से टूटकर बने थे।

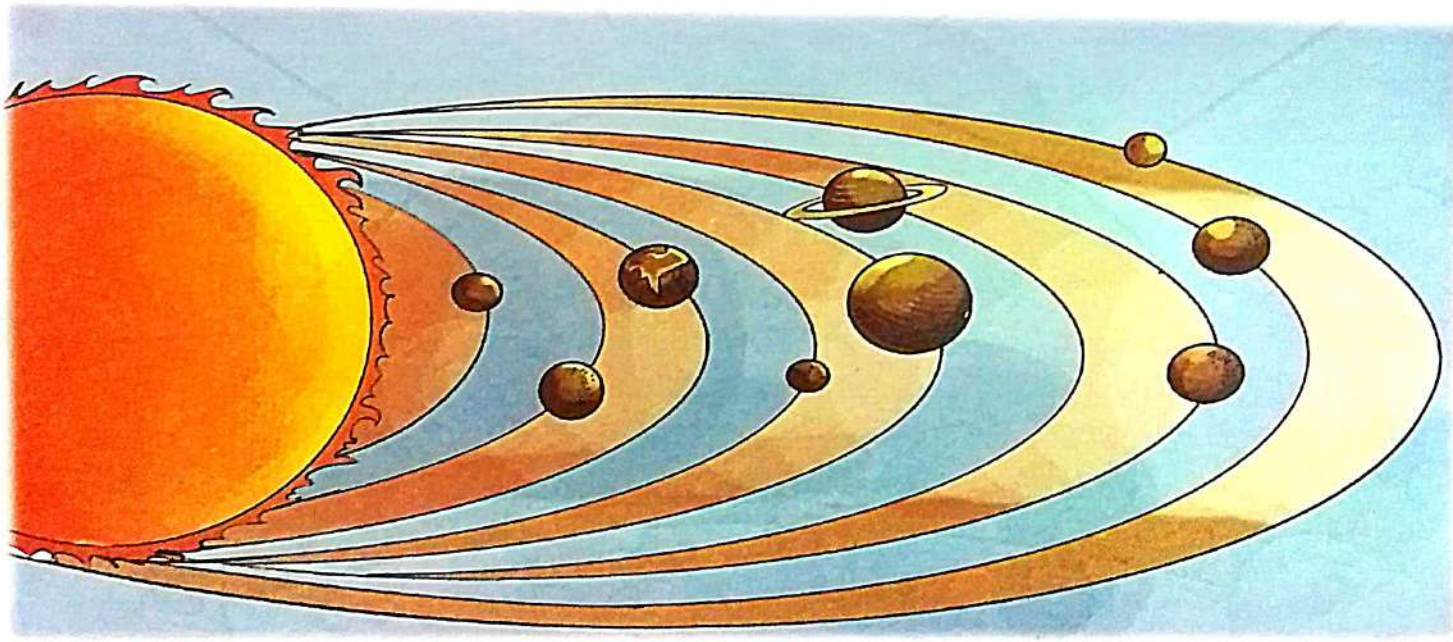

पृथ्वी सूर्य से करीब नौ करोड़ तीस लाख मील की दूरी पर है। यदि पृथ्वी से सूर्य तक रेल की पटरी बिछा दी जाए और वहाँ जाने के लिए एक रेलगाड़ी रात-दिन 60 मील प्रतिघंटा के हिसाब से चलती रहे, तो उसे सूर्य तक पहुँचने में ढाई सौ वर्ष लग जाएँगे।

सूर्य जलती हुई गैसों का एक गोला है। पृथ्वी भी इसी प्रकार प्रारंभ में आग की लपटों से घिरी जलती हुई गैसों का गोला थी। आरंभ में पृथ्वी कई प्रकार की धातुओं से उत्पन्न होने वाली भाप

से घिरी रही होगी। वह भाप आकाश में फैली। ऊपर की भाप धीरे-धीरे ठंडी हो गई और वर्षा की बूँदों के रूप में बरसने लगी। इस प्रकार वर्षा होने लगी। रात-दिन बरसते रहने के कारण पृथ्वी का ऊपर का भाग ठंडा हो गया। अंदर का भाग अब भी गर्म है।

पहले पृथ्वी बहुत गर्म थी। इस पर पानी पड़ते ही वह गर्म तवे पर पड़ी बूँदों के समान एकदम उड़ जाता था। यह क्रम सैकड़ों-हजारों वर्षों तक लगातार चलता रहा। पानी पड़ता और भाप बनकर उड़ जाता। धीरे-धीरे पृथ्वी की ऊपर की पपड़ी ठंडी होने लगी और ठंडी होकर मोटी मलाई की तरह जमने लगी। लेकिन, पृथ्वी के अंदर का लावा ऊपर की परत फोड़कर ज्वालामुखी के रूप में फूटता रहता था। नीचे से ज्वालामुखी का फूटना, उनमें से पत्थरों-चट्टानों का निकलना और ऊपर से लगातार वर्षा का होना, हर समय बिजली का भयंकर रूप से कड़कते रहना, बादलों की गर्जना ऐसी अवस्था थी पृथ्वी की। ऐसे में भला धरती पर कौन रह सकता था? वैज्ञानिकों का कहना है कि पृथ्वी पर इस प्रकार का भयंकर दृश्य लगभग एक करोड़ वर्ष तक छाया रहा होगा।

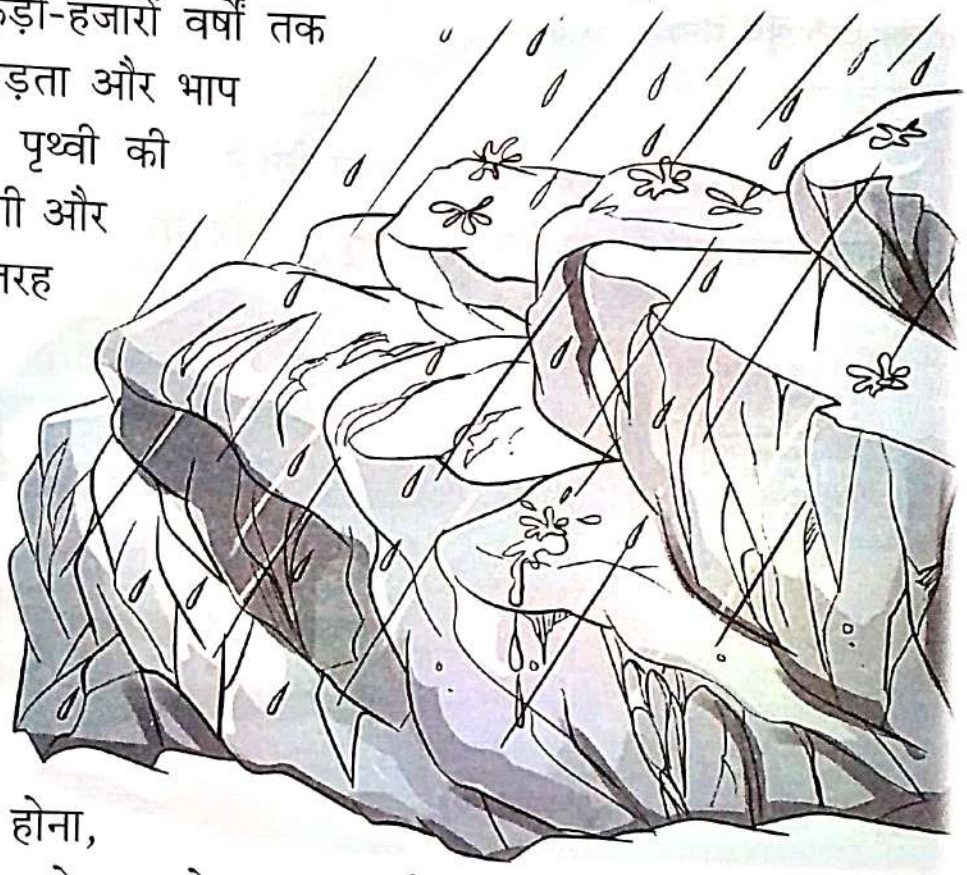

पृथ्वी की परत ठंडी हुई। उसमें दूध की मलाई के समान सिकुड़न आई। कुछ स्थान उभर गए। कुछ धँस गए। धँसे हुए भागों में ऊपर से बरसने वाला पानी भर गया। कहीं सरोवर बना, कहीं झील बनी, कहीं समुद्र बन गए। पहले-पहल इस पर गर्म पानी बहता होगा। धीरे-धीरे वह ठंडा हो गया। पृथ्वी की उन सिकुड़नों से ही टीलें, पर्वत, समुद्र, झीलें आदि बनीं। यह सुंदर हिमालय धरती की सिकुड़न ही है। अनुमान है कि पृथ्वी की उम्र डेढ़ अरब वर्ष है। आज पृथ्वी के तीन-चौथाई भाग पर पानी है और इसका एक-चौथाई भाग थल है।

पहले भले ही यह कैसी भी रही हो, किंतु अब हमारी पृथ्वी कितनी सुंदर है! इस पर
पहाड़ हैं, तो कहीं रेगिस्तान हैं। अद्‌भुत रूप है हमारी इस धरा का। कहीं नदियाँ व
कलकल कर रहे हैं, तो कहीं पक्षी चहचहा रहे हैं। रात को चमकने वाला यह चंद्रमा है तो
पृथ्वी का टुकड़ा। लेकिन इस पर न जंगल हैं, न नदियाँ हैं, न झीलें हैं और न तालाब हैं।
की एक बूँद तक नहीं। हरी घास का तिनका तक नहीं। इस पर कोई प्राणी तक नहीं रहता।
सूखी चट्‌टानें हैं।

हमारी इस धरती पर कितने प्राणी जन्म लेते हैं, इसकी गोद में पलते हैं, इसका अन्न खाते
इसका पानी पीते हैं, इसलिए इसे मातृभूमि कहा गया है। यह हमारी माँ है, हम इसके पुत्र हैं।

शब्द–अर्थ

सरोवर - तालाब; धरा - पृथ्वी; दृश्य - नजारा; सौरमंडल - सूर्य का मंडल; पश्चात् - पीछे
वक्ष स्थल - छाती; मंडल - समूह; अनुमान - अंदाज़ा; भयंकर - डरावना; अद्‌भुत - अनोख
प्राणी - जीव।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारि

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) पृथ्वी टूटकर अलग हुई है–

(i) चाँद से ( ) (ii) सूरज से (

(ख) सौरमंडल में ग्रहों की संख्या है–

(i) आठ ( ) (ii) नौ (

(ग) पृथ्वी के अंदर का लावा बाहर निकलता है–

(i) ज्वालामुखी के रूप में ( ) (ii) चट्‌टानों के रूप में (

(घ) अनुमान है कि पृथ्वी की उम्र है–

(i) पाँच अरब वर्ष ( ) (ii) डेढ़ अरब वर्ष (

2. **सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य कथन के सामने ✗ लगाओ–**

(क) सूर्य के चारों ओर चक्कर काटने वाले को ग्रह कहते हैं। ( )

(ख) सूर्य जलती हुई गैसों का एक गोला है। ( )

(ग) पहले पृथ्वी बहुत ठंडी थी। ( )

(घ) आज पृथ्वी के तीन-चौथाई भाग पर पानी है। ( )

(ङ) चंद्रमा पर पानी की बड़ी-बड़ी झीलें हैं। ( )

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?

.....

.....

(ख) सौरमंडल के ग्रहों के नाम क्या हैं?

.....

.....

(ग) पृथ्वी की सूर्य से दूरी कितनी है?

.....

.....

(घ) आज पृथ्वी का स्वरूप कैसा है?

.....

.....

1. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो–**

(क) गर्म – ..... (ख) प्रारंभ – .....

(ग) ऊपर – ..... (घ) रात – .....

(ङ) अंदर – ..... (च) सुंदर – .....

2. निम्नलिखित शब्दों को उचित विशेषणों से मिलाओ–

(क) ठंडी	(i) मलाई
(ख) आठ	(ii) भाप
(ग) सुंदर	(iii) पृथ्वी
(घ) गर्म	(iv) ग्रह
(ङ) मोटी	(v) हिमालय

3. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो–

(क) सूर्य जलती हुई गैसों की एक गोली है।

.....

(ख) रात-दिन बरसते रहने के कारण पृथ्वी की ऊपर का भाग ठंडी हो गया।

.....

(ग) यह क्रम हजारों-सैकड़ों वर्षों तक लगातार चलती रही।

.....

(घ) आज पृथ्वी की एक-चौथाई भाग जल हैं।

.....

.....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- संसार का एक नक्शा लेकर उस पर जलीय भागों को नीले रंग से तथा स्थलीय भागों को भूरे रंग से चिह्नित करो।
- वनों के विनाश से पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों पर एक चार्ट बनाकर कक्षा में टाँगों।

7 मैं हूँ पानी

आकाश से पानी बरसता देखकर आप कैसा अनुभव करते हैं?

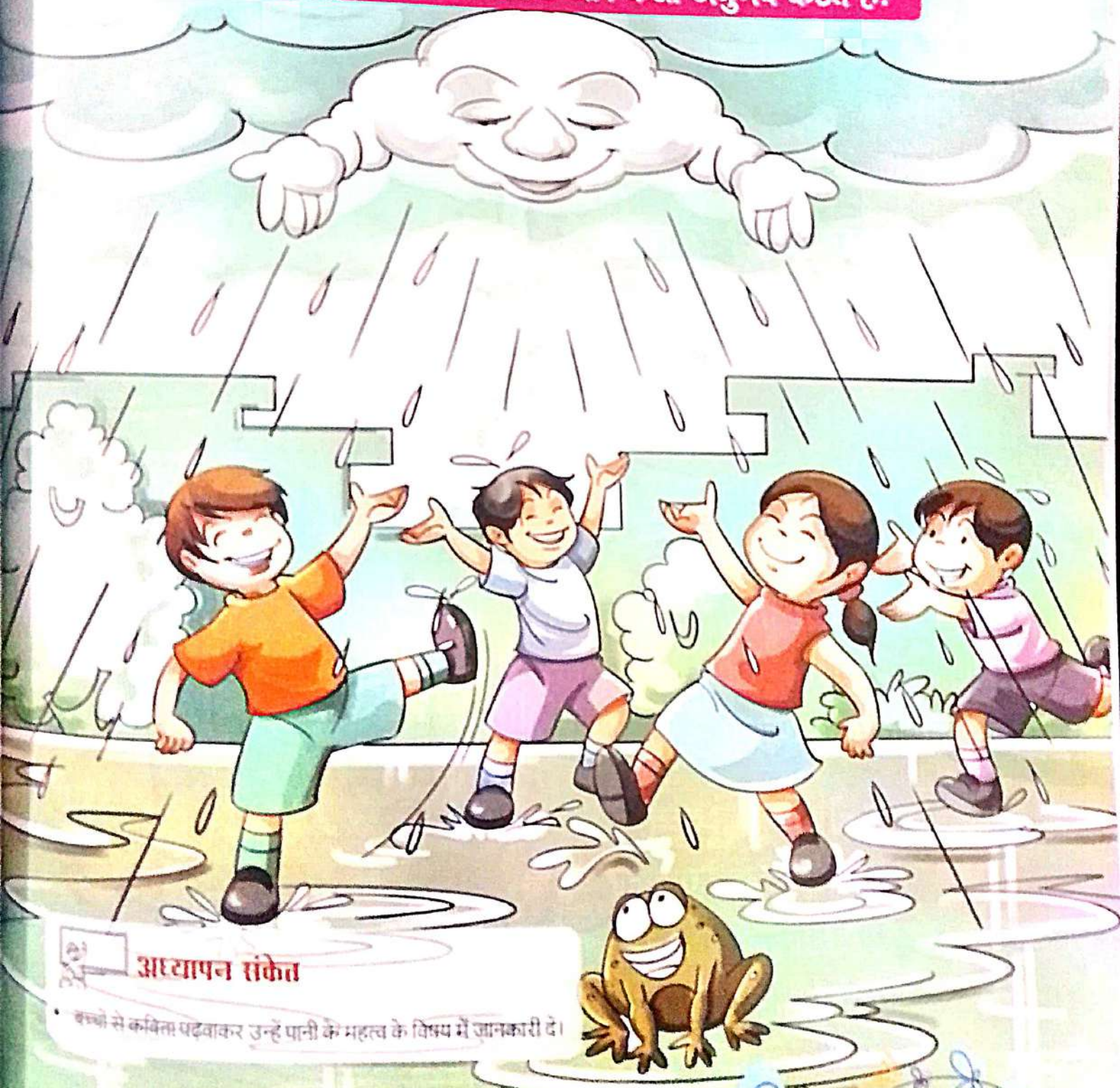

अध्यापन संकेत

- बच्चों से कविता पढ़वाकर उन्हें पानी के महत्व के विषय में जानकारी दें।

(कविता)

- पानी हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। यहाँ पानी अपना परिचय स्वयं ही दे रहा है—

मैं हूँ पानी,
मुझको पीकर
दुनिया जीती
नन्ही गुड़िया
हो या नानी।

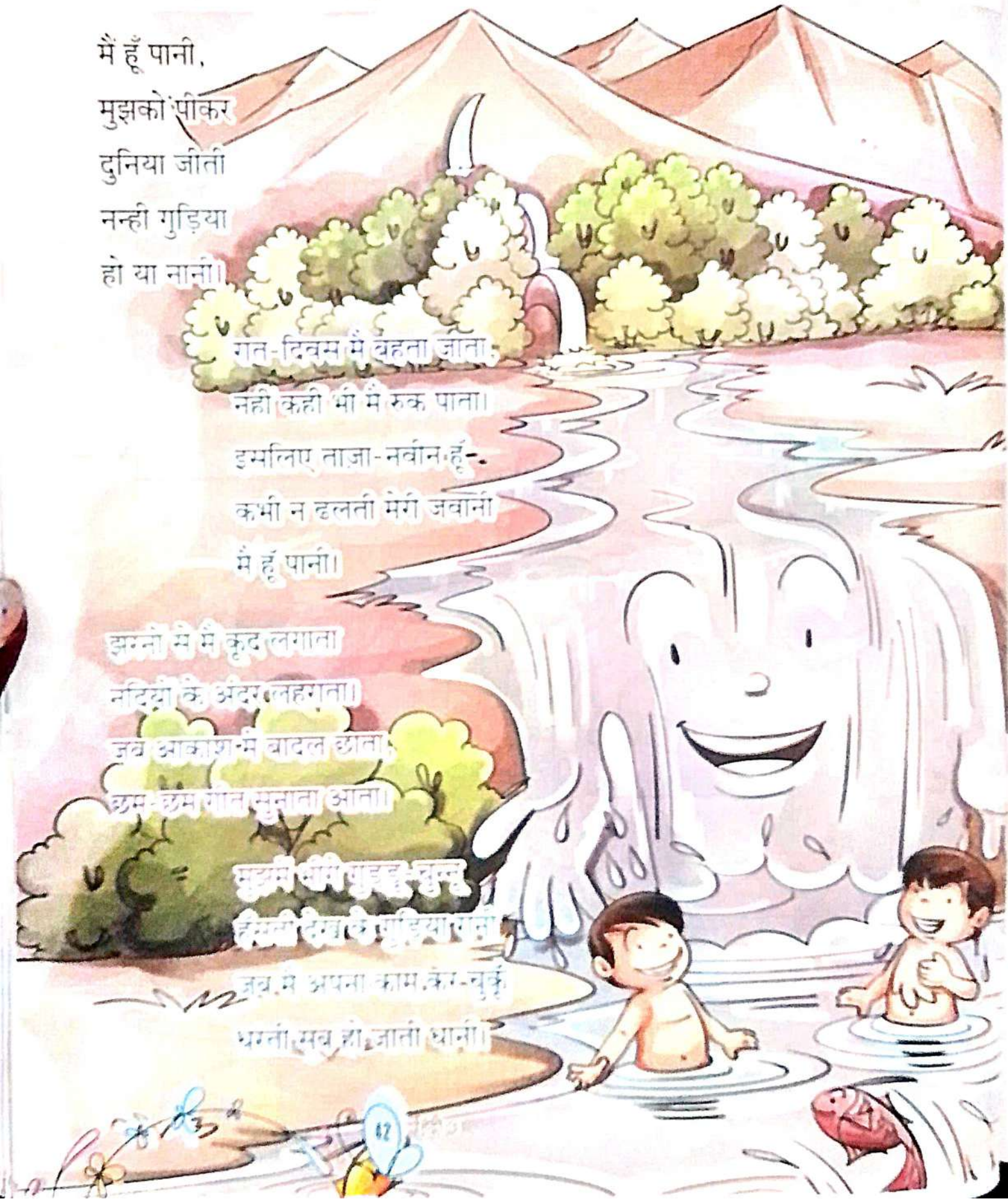

रात-दिवस मैं बहता जाता,
नहीं कहीं भी मैं रुक पाता।
इसलिए ताज़ा-नवीन हूँ,
कभी न ढलती मेरी जवानी
मैं हूँ पानी।

झरनों से मैं कूद लगाता
नदियों के अंदर लहराता।
जब आकाश में बादल छाता,
छम-छम गीत सुनाता आता।

मुझमें तैरें गुड्डू-चुन्नू
हँसती देख के गुड़िया रानी
जब मैं अपना काम कर चुकूँ
धरती सब हो जाती धानी।

मेरे बिन हर काम अटकता
चूल्हा-चौका, नहाना-धोना,
इसलिए मुझे आदर देती,
कहकर 'देव' भारत की जनता।

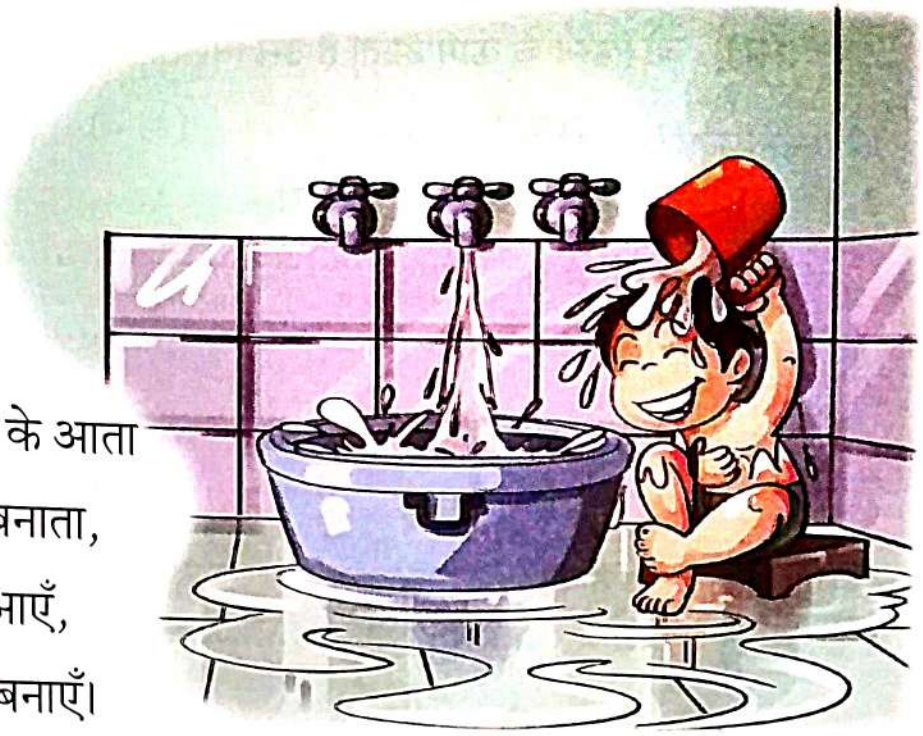

सच है जो काम किसी के आता
अपना जीवन सफल बनाता,
उसको सबसे मिलें दुआएँ,
ऐसे ही जीवन सफल बनाएँ।

—डॉ० गीता रानी

शब्द-अर्थ

दुआएँ - आशीर्वाद; सफल - सार्थक; जवानी - युवा अवस्था; नवीन - नया; अटकता - रूकता।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) दुनिया जीती है–

(i) पानी देखकर ( ) (ii) पानी पीकर ( )

(ख) पानी उपयोगी है–

(i) केवल बच्चों के लिए ( ) (ii) सभी के लिए ( )

(ग) भारत की जनता पानी को कहती है–

(i) देव ( ) (ii) दानव ( )

(घ) जो किसी के काम आता है उसे मिलती हैं–

(i) वस्तुएँ ( ) (ii) दुआएँ ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

(क) झरनों से मैं .....

..... लहराता।

जब आकाश .....

..... आता।

(ख) सच है जो .....

..... सफल बनाता।

उसको सबसे .....

..... बनाएँ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) पानी की जवानी क्यों नहीं ढलती?

.....

.....

(ख) पानी कौन-कौन से काम करने में सहायक है?

.....

.....

(ग) पानी कहाँ से कूद लगाता है?

.....

.....

(घ) पानी हमें क्या सिखाता है?

.....

.....

(ङ) भारत की जनता पानी को क्या कहती है?

.....

.....

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखो–

(क) आता – .....

(ख) धानी – .....

(ग) दुआएँ – .....

(घ) पानी – .....

2. निम्नलिखित शब्दों में से बेमेल शब्दों पर गोला (○) बनाओ–

(क) लाल, हरा, धानी, बाल।

(ख) नहाना, रोना, पकाना, धोना।

(ग) चावल, नमक, दाल, रोटी।

(घ) आम, सेब, अंगूर, दातुन।

3. सही मिलान करो–

(क) पानी की	(i) थपेड़े
(ख) लू के	(ii) सरदी
(ग) कड़कड़ाती	(iii) ठंडक
(घ) उमस भरी	(iv) मौसम
(ङ) सुहाना	(v) गरमी

4. समान अर्थ वाले दो-दो शब्द लिखो–

(क) पानी – ....

(ख) रात – ....

(ग) दिवस – ....

(घ) आकाश – ....

(ङ) बादल – ....

कुछ करने के लिए

(क) अपनी कक्षा में वर्षा का एक गीत सुनाओ।

(ख) 'जल का महत्व' इस विषय पर पंक्तियाँ लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- 'पानी की बचत' कैसे करें? इस विषय पर कक्षा में चर्चा करो।

8 हीरा और कोयला

इस संसार में हर वस्तु व प्राणी महत्वपूर्ण है, अतः अभिमान करना व्यर्थ है

अध्यापन संकेत

- विद्यार्थियों को पाठ के माध्यम से विनम्र रहने की सीख दें।

(एकांकी)

(एक ही खदान से निकले कोयले और हीरे के दो ढेर पास-पास पड़े हैं। वे आपस में बात करते हैं।)

हीरा – (नाक-भौंह सिकोड़कर) मेरे पास तू क्यों बैठा है?

कोयला – क्यों, मेरा और तेरा तो जन्म-जन्म का साथ है।

हीरा – (क्रोध से) जन्म-जन्म का साथ! चल हट, दूर हो यहाँ से।

कोयला – भाई, लड़ता क्यों है? हम दोनों तो सगे भाई हैं।

हीरा – मैं गोरा-चिट्टा, तू काला-कलूटा, भला कौन कहेगा कि तू मेरा भाई है?

कोयला – काले और गोरे क्या सगे भाई नहीं होते? देव और दानव भी तो भाई-भाई ही थे।

हीरा – बहुत ठीक, लेकिन इस हिसाब से तो तू दानव हुआ।

कोयला – कौन दानव है और कौन देव, यह तो कर्म से ही विदित होगा।

हीरा – (तुनककर) अच्छा, रहने दो अपना ज्ञान अपने पास। देख, मैं सूरज की त चमकता हूँ। रंग-बिरंगी किरणें निकलती हैं मुझमें से। देखने वालों की तबि हरी हो जाती है, मेरी झलक मात्र से।

कोयला – अरे क्या बकता है? तू तो एक कंकड़ जैसा खान से बाहर जाता है। तुझे तो र काटा-छाँटा जाता है। फिर तेरा अपना प्रकाश कहाँ? तुझमें जैसी छाया प वैसा ही बन जाता है: गंगा गए गंगादास, जमुना गए जमनादास। क्यों है ना।

हीरा – अरे, पूरी बात तो सुन। मैं बड़े-बड़े राजाओं के सिरों पर बैठता हूँ। देवताओं के मुकुट में जड़ा जाता हूँ, सुंदरियों के गहनों में शोभा पाता हूँ।

कोयला – हाँ, तू अपने कारण राजाओं के सिर कटाता है, बड़े-बड़े युद्ध करवाता है और सुंदरियों की स्वाभाविक सुंदरता पर पानी फेर देता है।

हीरा – मैं बड़ी-बड़ी तिजोरियों और खज़ानों में रखा जाता हूँ, मेरे लिए पहरा लगा रहता है। तेरी तरह गलियों में मारा-मारा नहीं फिरता।

कोयला – वाह, एक तो कैदी की तरह ताले में बंद रहता है और ऊपर से घमंड करता है। मैं तो आज़ादी से जहाँ चाहता हूँ, घूमता हूँ।

हीरा – अरे रहने दो, छोटा मुँह बड़ी बात। तू सदा जलने वाला है। मेरी उन्नति देख नहीं सकता।

कोयला – हाँ, मैं जलता हूँ, किंतु दूसरों के लिए। मैं गरीब, अमीर सब की ज़रूरतें पूरी करता हूँ। कल-कारखानों को चलाकर देश को धनवान बनाता हूँ। रेल के इंजनों में जलकर मनुष्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता हूँ।

हीरा – बस-बस, रहने दे अपनी महानता। बड़ा परोपकारी बनता है।

कोयला – हाँ, क्यों नहीं। अब तेरे दिन बीत गए। एक दिन वह आने वाला है, जब तेरी कोई पूछ नहीं रहेगी। तू गरीब-अमीर के बीच की खाई को चौड़ी करता है। मैं सबको एक सूत्र में बाँधता हूँ।

हीरा – भाई, बात तो तू कुछ ठीक कहता है। इस मशीनी युग में वाकई तेरा बोलबाला है। अब तो मुझसे बने आभूषणों का शौक भी कम होता जा रहा है। कल इधर एक महात्मा आए थे। वे सबको कह रहे थे– "हीरे-मोती के आभूषण त्याग कर हृदय में सत्य, अहिंसा, प्रेम और मानवता के आभूषणों को धारण करो।"

कोयला – हाँ, उनकी बात सच है। महात्मा की वाणी से तेरे हृदय में सच्चा प्रकाश हुआ। भाई, जीवन उसी का सार्थक होता है जो मानवता के लिए अपने-आपको मिटा दे।

हीरा – (सिर नीचा करके) अब तुम मुझे और शर्मिंदा मत करो।

—रायकृष्ण दास

शब्द-अर्थ

महात्मा - ज्ञानी; सार्थक - सफल; वाणी - उपदेश; महानता - बड़प्पन; विदित - ज्ञात; देव - दैव
दानव - राक्षस; घमंड - अभिमान; मात्र - केवल; प्रकाश - रोशनी; सुंदरता - खूबसूरती।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आध

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) हीरा कोयले को देखकर–

(i) प्रसन्न हुआ ( ) (ii) नाक-भौं सिकोड़ने लगा (

(ख) कोयले ने हीरा को बताया कि हम दोनों–

(i) भाई-भाई हैं ( ) (ii) शत्रु हैं (

(ग) राजाओं के सिरों पर बैठता है–

(i) हीरा ( ) (ii) कोयला (

(घ) हीरे ने कहा कि कोयला–

(i) उससे जलता है ( ) (ii) उससे प्रेम करता है (

2. किसने कहा–

(क) "मैं बड़ी-बड़ी तिजोरियों और खज़ानों में रखा जाता हूँ।" .....

(ख) "मैं तो आज़ादी से जहाँ चाहे, वहाँ घूमता हूँ।" .....

(ग) "हाँ, मैं जलता हूँ, पर दूसरों के लिए।" .....

(घ) "अब तुम मुझे और शर्मिंदा न करो।" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) महात्मा जी ने कौन से आभूषण धारण करने की बात कही?

.....

.....

(ख) कोयले ने अपनी क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?

.....

.....

(ग) हीरे ने अपनी कौन-कौन सी विशेषताएँ बताईं?

.....

.....

(घ) किसका जीवन सार्थक होता है?

.....

.....

1. पाठ में आए इन मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) छोटा मुँह बड़ी बात – .....

.....

(ख) मारा-मारा फिरना – .....

.....

(ग) पानी फेरना – .....

.....

(घ) एक सूत्र में बाँधना – .....

.....

(ङ) सिर नीचा करना – .....

.....

2. नीचे दिए गए शब्दों को सही कॉलम में लिखो–

खाई, गहना, चूड़ी, पाजेब, मुकुट, राजा, सिंहासन, छत्र, देश, प्रजा।

स्त्रीलिंग	पुल्लिंग

3. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–

(क) हीरा – ..... (ख) कोयला – .....

(ग) पटरी – ..... (घ) खाई – .....

(ङ) लड़ाई – ..... (च) ताला – .....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- कोयले की खानों में काम करने वाले मज़दूरों के जीवन के बारे में पता लगाओ कि उन्हें किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- अपनी योग्यता का बढ़-चढ़कर वर्णन करना 'शेखी बघारना' कहलाता है। क्या आपके किसी मित्र को शेखी बघारने की आदत है? यदि हाँ, तो उसका वर्णन करो।

.....

.....

.....

.....

.....

- कच्चे कोयले की अंगीठी कैसे जलाई जाती है, पता लगाओ।

बकरी और सयाने बच्चे

(चित्रकथा)

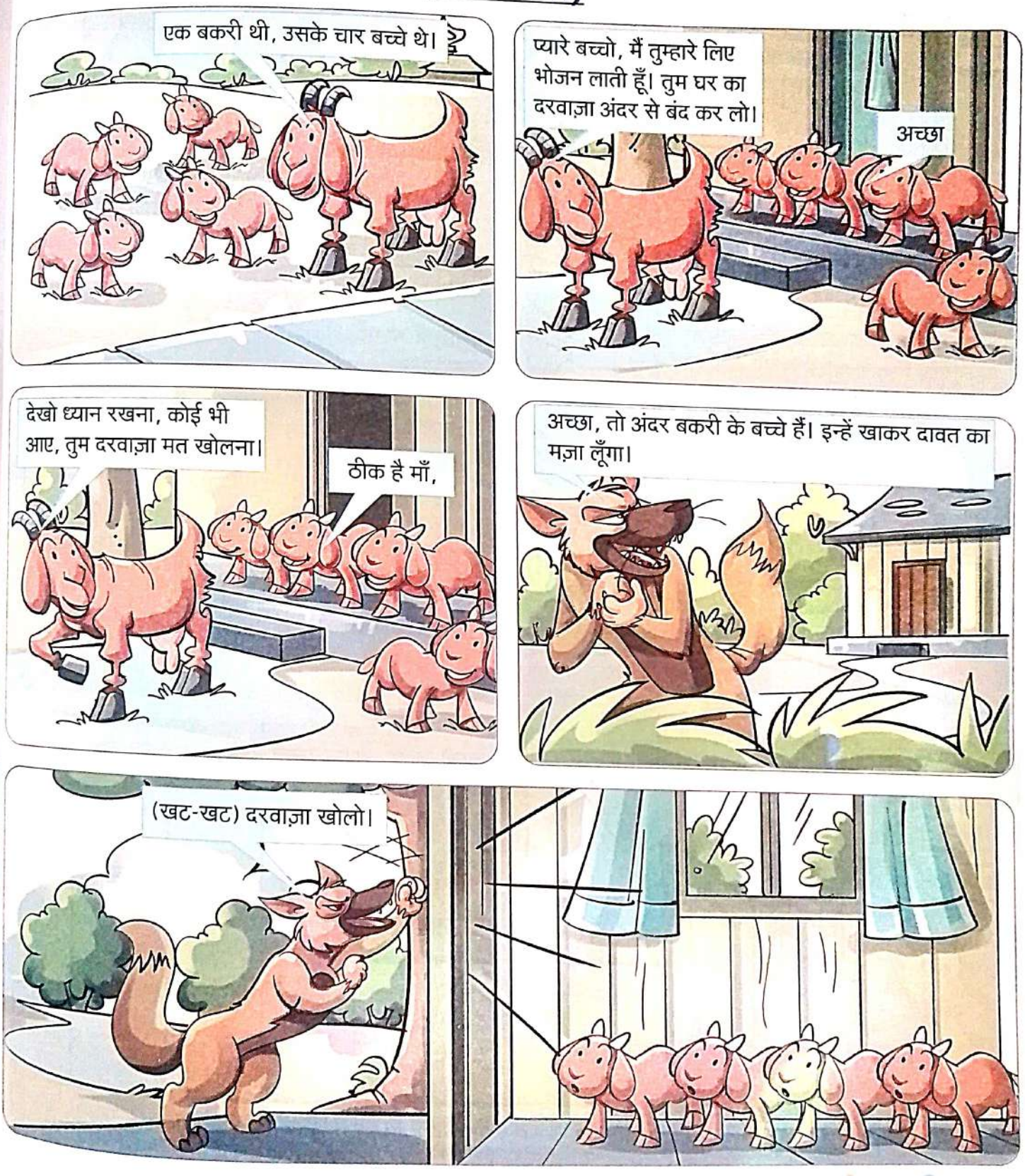

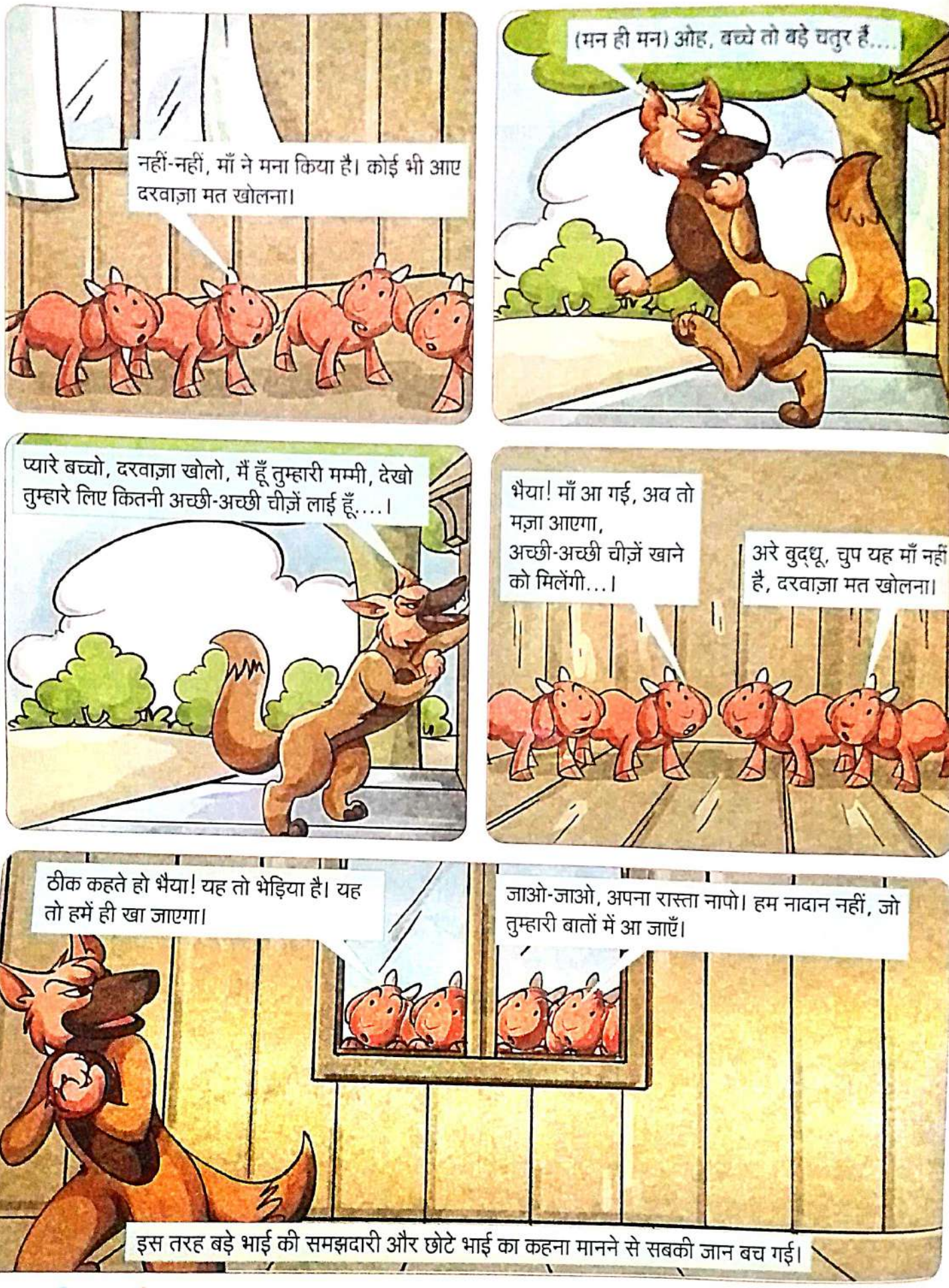
नहीं-नहीं, माँ ने मना किया है। कोई भी आए दरवाज़ा मत खोलना।
(मन ही मन) ओह, बच्चे तो बड़े चतुर हैं....।
प्यारे बच्चो, दरवाज़ा खोलो, मैं हूँ तुम्हारी मम्मी, देखो तुम्हारे लिए कितनी अच्छी-अच्छी चीज़ें लाई हूँ....।
भैया! माँ आ गई, अब तो मज़ा आएगा, अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने को मिलेंगी...।
अरे बुद्धू, चुप यह माँ नहीं है, दरवाज़ा मत खोलना।
ठीक कहते हो भैया! यह तो भेड़िया है। यह तो हमें ही खा जाएगा।
जाओ-जाओ, अपना रास्ता नापो। हम नादान नहीं, जो तुम्हारी बातों में आ जाएँ।
इस तरह बड़े भाई की समझदारी और छोटे भाई का कहना मानने से सबकी जान बच गई।

9 महकी बगिया

हरियाली मन को खुशी से भरपूर करती है। क्या आपके आस-पास भी हरियाली है?

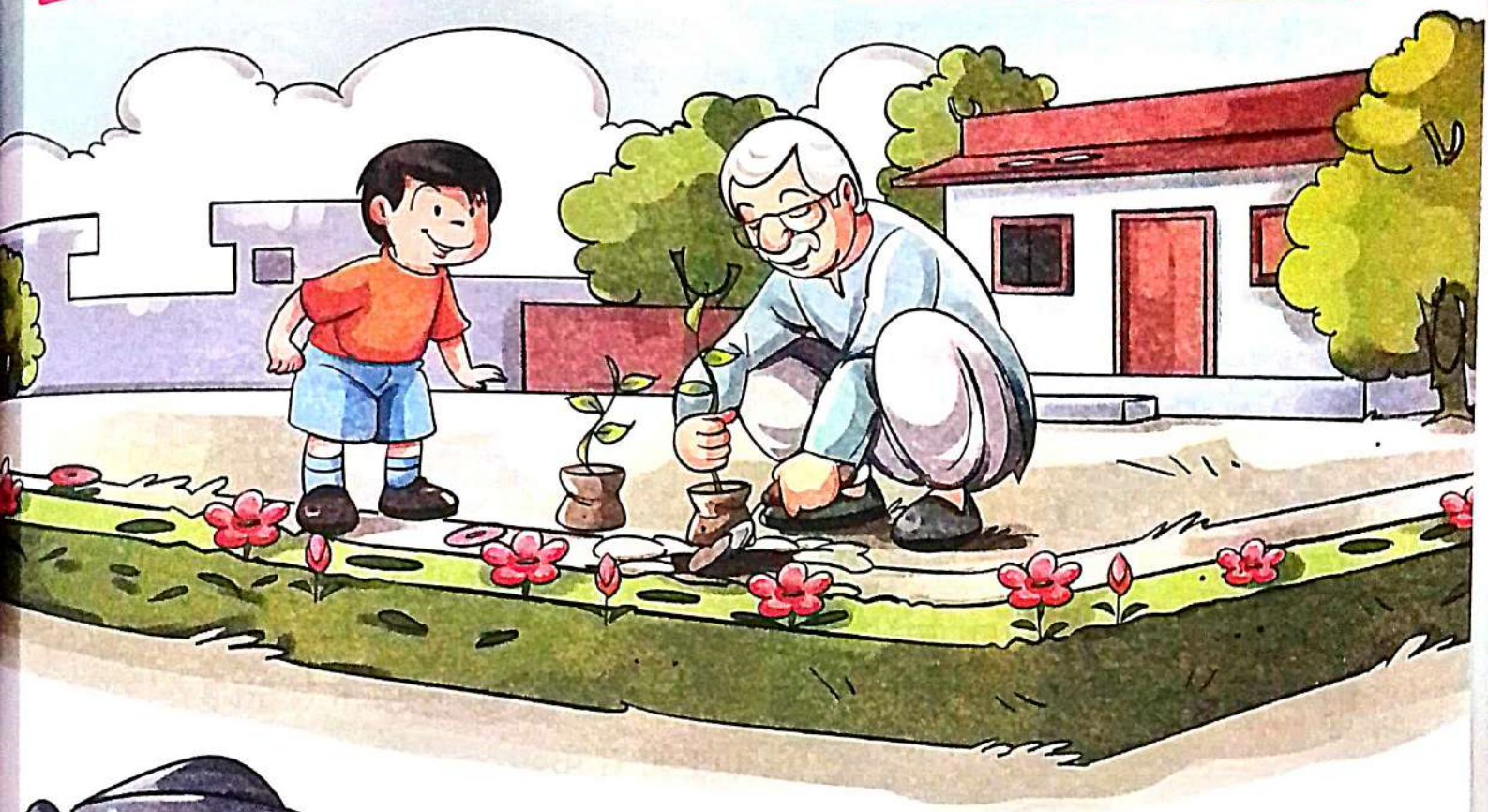

अध्यापन संकेत

- बच्चों को अपने वातावरण को हरा-भरा बनाए रखने की प्रेरणा दें।

- प्रकृति के बीच समय बिताना समय का सबसे अच्छा उपयोग है कैसे? आओ जानें।

(दैनिक प्रसंग)

रोहित के दादा जी सुबह-शाम सैर करते थे। रोहित भी उनके साथ जाना चाहता था, पर सु
स्कूल जाने की जल्दी होती, तो शाम को वह होमवर्क करके टीवी देखने बैठ जाता। पर इ
बार जब दशहरे की छुट्टियाँ पड़ीं, तो वह दादा जी के साथ शाम को सैर पर गया।

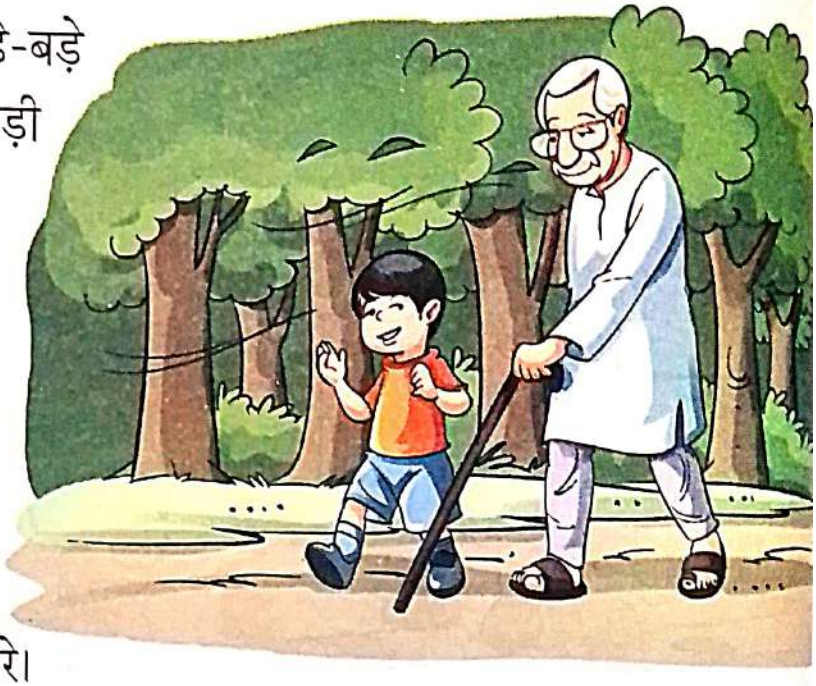

राह में सड़क के दोनों किनारों पर बड़े-बड़े पेड़ लगे थे। सहसा उसकी नाक में बड़ी अच्छी सुगंध आई। "वाह....।" रोहित ने एक गहरी साँस ली। "यह किसकी खुशबू है?" रोहित ने दादा जी से पूछा।

"रात की रानी की" दादा जी बोले।

तभी हवा का एक झोंका आया और बहुत से सफ़ेद फूल उनके सिर पर गिरे।

रोहित को बड़ा अच्छा लगा। सारे रास्ते तरह-तरह की सुगंधें उसकी नाक में आकर दिमाग में नई स्फूर्ति पैदा करने लगीं। "क्या हम अपने घर में भी ऐसी खुशबू फैला सकते हैं?" रोहित ने दादा जी से पूछा।

"हाँ, क्यों नहीं, बस थोड़ी मेहनत और देखभाल की ज़रूरत है" दादा जी ने कहा।

"मैं आपका हाथ बटाऊँगा, आप मुझे बताइए कि क्या करना होगा?"

"करना क्या है, बस आँगन के सामने की मिट्टी की गुड़ाई करके उसमें पौधे लगाने

होंगे और समय पर उन्हें पानी देना होगा, कभी-कभी उनमें खाद भी डालनी होगी, और आस-पास उग आए फ़ालतू घास-तिनकों को उखाड़ना होगा।''

"इसके बाद तो बड़े सुंदर-सुंदर फूल लहलहाएँगे और सारी बगिया में तितलियाँ उड़ेंगी, प्यारी-प्यारी खुशबू भी आएगी, है न।''

"हाँ बिल्कुल।'' दादा जी ने मुस्कराते हुए कहा।

"ये पौधे कहाँ से मिलेंगे?''

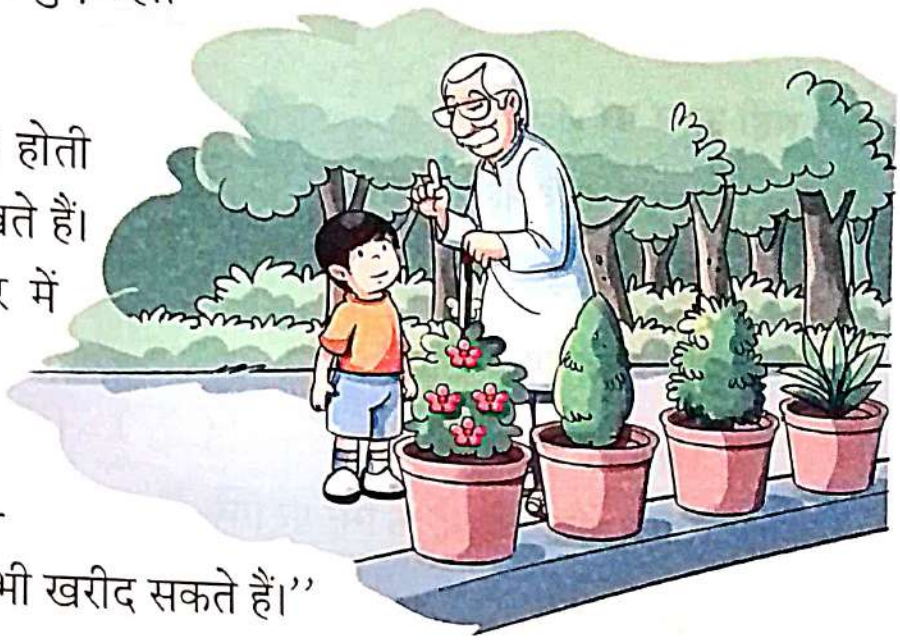

"नर्सरी से, नर्सरी एक ऐसी जगह होती है, जहाँ नन्हें-नन्हें पौधे उगाकर रखते हैं। वहाँ से इन्हें लाकर हम अपने घर में रोप सकते हैं। तुमने देखा होगा कि बहुत-से पौधे बेचने वाले पौधों को ठेले पर रखकर गली-मुहल्लों में बेचते हैं। हम इन्हें उनसे भी खरीद सकते हैं।''

रोहित ने कहा– "ठीक है मेरी गुल्लक में जितने पैसे जमा हैं, उनसे मैं पौधे ही खरीदूँगा।''

"शाबाश।'' दादा जी बोले, "ये हुई न बात। इतना आनंद आपको खिलौनों से नहीं आएगा जितना इन पौधों के खिलने पर मिलेगा।''

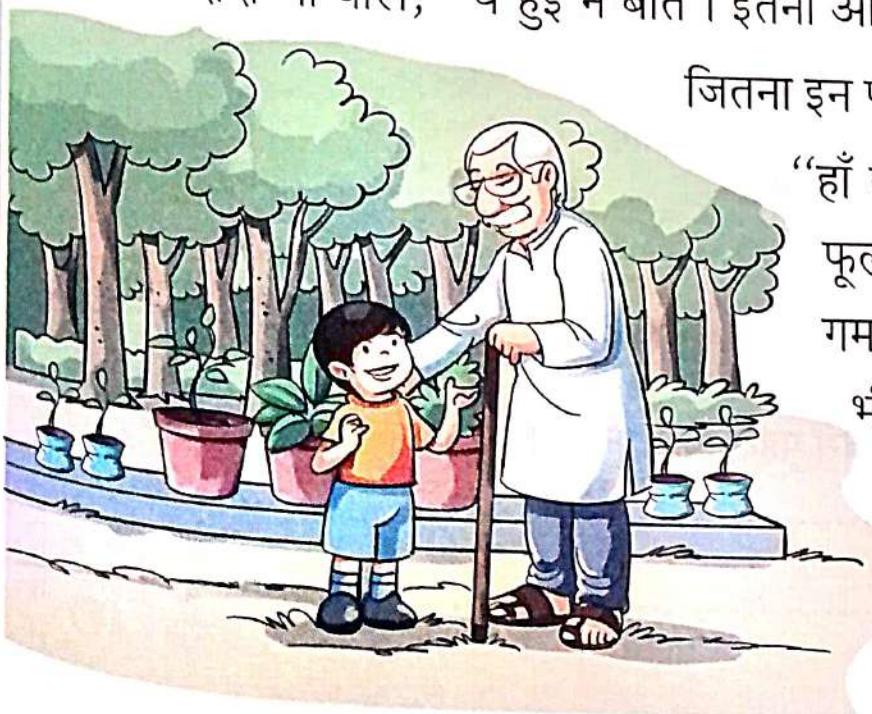

"हाँ दादा जी, तब दादी के लिए पूजा के फूल भी घर पर ही मिल जाया करेंगे। तब गमलों में खिले फूलों से घर की सजावट भी हो जाया करेगी।''

"बिलकुल, चलो कल से ही काम शुरू करते हैं।'' दादा जी ने रोहित का कंधा थपथपाते हुए कहा।

शब्द–अर्थ

सहसा - अचानक; स्फूर्ति - ताजगी; आनंद - मजा; सजावट - सजाने का काम।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारि

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) सड़क के किनारों पर लगे थे–

(i) बोर्ड ( ) (ii) पेड़ (

(ख) सैर करते हुए रोहित को आई–

(i) जंभाई ( ) (ii) सुगंध (

(ग) रोहित और दादा जी के सिर पर गिरे–

(i) फूल ( ) (ii) फल (

(घ) पौधों के खिलने का आनंद है–

(i) खिलौनों से बढ़कर ( ) (ii) फल (

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) रोहित सैर पर क्यों नहीं जा पाता था?

.....

.....

(ख) सैर पर जाने पर रोहित को सबसे पहले किन फूलों की सुगंध आई?

.....

.....

(ग) सुगंध से खुश होकर रोहित ने दादा जी से क्या पूछा?

.....

.....

(घ) पौधों के लिए रोहित ने पैसे कहाँ से लेने की योजना सुझाई?

.....

.....

भाषा की बात

1. **है, हैं, हूँ लिखकर वाक्य पूरा करो–**

(क) बगिया में फूल खिलते .....।

(ख) मैं पौधे उगाना चाहता .....।

(ग) ठंडी हवा चल रही .....।

(घ) मैं बचत करता .....।

2. **दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द पर ✓ लगाओ–**

(क) पेड़	–	( ) वृक्ष		( ) पात
(ख) फूल	–	( ) फसल		( ) पुष्प
(ग) बगिया	–	( ) वाटिका		( ) लता
(घ) पानी	–	( ) झरना		( ) जल

3. **प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ–**

(क) खुश + ई – .....

(ख) दुख + ई – .....

(ग) रंगीन + ई – .....

(घ) सफ़ेद + ई – .....

कुछ करने के लिए

आपके घर या आस-पास कौन से पेड़ हैं? एक सूची बनाओ—

1.		
2.		
3.		
4.		

- क्या आप इन पेड़ों को पहचानते हैं, यदि हाँ, तो चित्र के नीचे उसका नाम लिखो—

1. .....

2. .....

3. .....

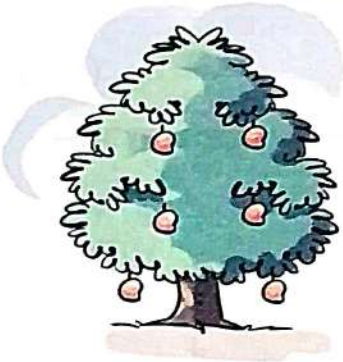

4. .....

संगति का फल

(कविता) पठन हेतु

था गुलाब का पौधा कहीं पर,
फूल खिले थे उसमें सुंदर।
लड़का एक वहाँ पर आकर,
सूँघा ढेला एक उठाकर।

महक रहा था ढेला ऐसा,
ताज़ा फूल महकता जैसा।

फूल वहाँ पर झड़ते होंगे,
उसके ऊपर पड़ते होंगे।

इससे उसमें खुशबू आई
संगति का फल ऐसा भाई।

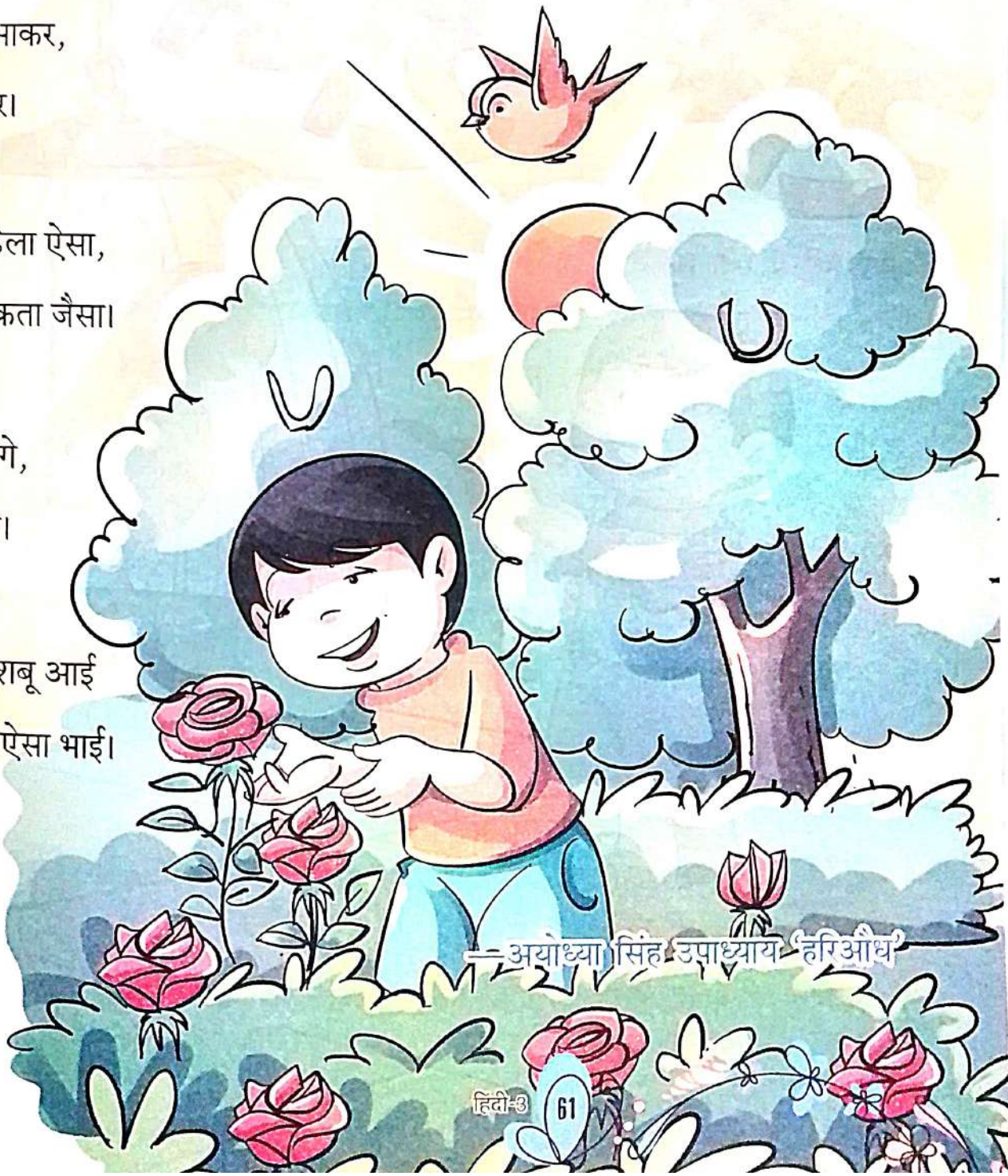

— अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

10 रट्टू तोता

कुछ पक्षी मनुष्य के बराबर होने के लिए उनकी विशेषताओं की नकल किया करते हैं

राम राम

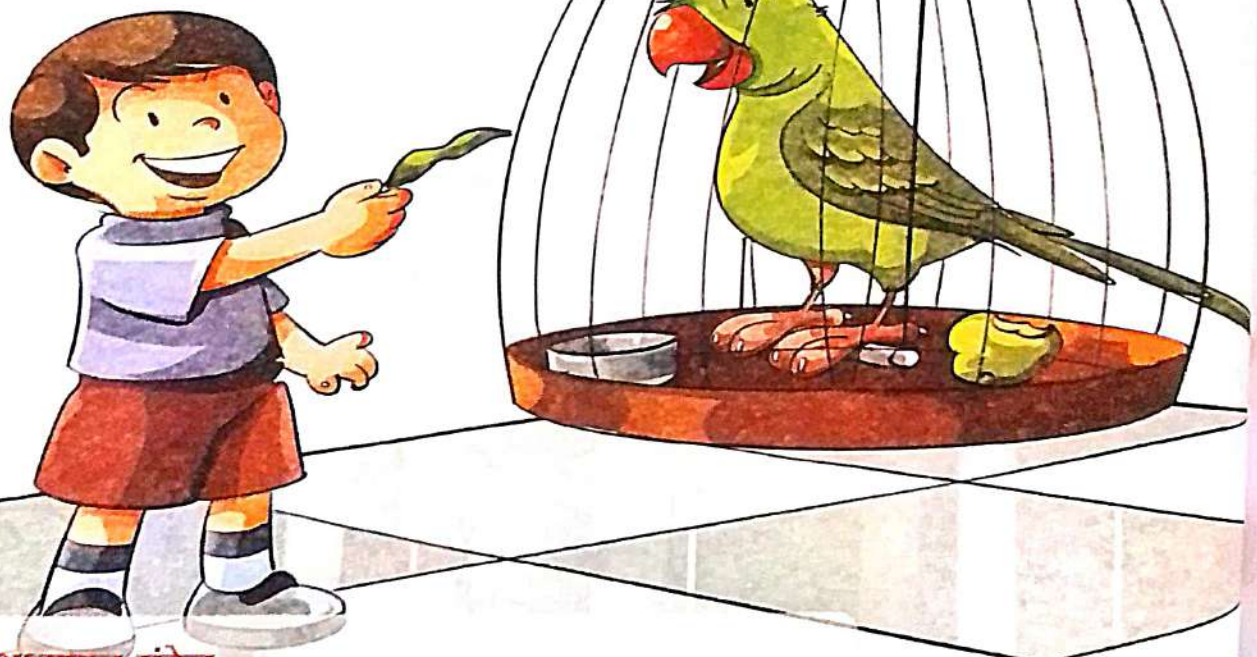

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि सभी प्राणियों में भावनाएँ होती हैं, भले ही वे उन्हें किसी भी माध्यम से प्रकट करें।

(लोककथा)

- हर देश की अपनी लोककथाएँ होती हैं, जिन्हें प्रायः नानी-दादी या माँ बच्चों को सुनाती है। यहाँ थाइलैंड की एक लोककथा दी जा रही है। आओ पढ़ें–

हर एक पक्षी की अपनी एक बोली होती है और वह सदा उसे ही बोलता है। मगर दो-चार पक्षी ऐसे भी हैं, जो अपनी बोली को अदल-बदल कर बोलते हैं। तोता और मैना तो ऐसे पक्षी हैं, जो दूसरे की बोली की नकल भी कर लेते हैं। तोते को जैसा पढ़ाओ, वैसा वह बोलने लगता है। तोते में यह गुण कैसे आ गया, वह मनुष्य की बोली की नकल कैसे कर लेता है– यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

प्रश्न का उत्तर थाइलैंड की एक लोककथा में मिलता है। वह कथा इस प्रकार है– प्राचीन काल में थाइलैंड में एक पक्षी होता था, जो थोड़ा-बहुत सिखाने पर न केवल मनुष्य की बोली बोल लेता था, बल्कि अपने विचार भी मनुष्य की बोली में प्रकट कर सकता था। इस पक्षी का नाम था 'लोरीकीट'।

एक किसान था। उसने एक लोरीकीट को पाल रखा था। जब वह खेत जाता, तो लोरीकीट के पिंजड़े को साथ ले जाता और एक पेड़ की शाखा पर टाँग देता। एक दिन जब किसान अपने खेत पर पहुँचा, तो क्या देखता है कि पड़ोसी की भैंस ने उसके आधे खेत चर लिए हैं। किसान को क्रोध आ गया। उसने भैंस को अपने घर में छुपा लिया। दूसरे दिन पड़ोसी अपनी भैंस को खोजते-खोजते उधर आया। उसने अपनी भैंस के बारे में किसान से पूछा। किसान ने कहा– "मैंने तुम्हारी भैंस नहीं देखी।"

इतने में लोरीकीट बोल पड़ा– "मेरे मालिक ने तुम्हारी भैंस को छिपा दिया है। उसने आज उसका दूध निकालकर पिया भी है।"

यह सुनकर पड़ोसी ने किसान के घर में खोजा और वहाँ उसे भैंस मिल गई। किंतु किसान ने

इस बात को अस्वीकार करते हुए कहा– "यह भैंस मेरी है। तुम्हारे पास इस बात का क्या सबूत है कि यह भैंस तुम्हारी है?"

पड़ोसी की समझ में न आया कि वह क्या करे। उसने अदालत में मुकदमा दायर कर दिया। पड़ोसी ने सोचा कि लोरीकीट पक्षी को ही गवाह के रूप में पेश कर दूँगा। इधर किसान ने सोचा– अगर लोरीकीट ने गवाही दी, तो मैं फँ जाऊँगा। क्यों न किसी तरह 'लोरीकीट' को ही झूठा सिद्ध कर दूँ। उसने एक युक्ति सोचं किसान ने लोरीकीट को पिंजड़े से निकालकर एक घड़े में बंद कर दिया।

घड़े के मुँह पर कपड़ा बाँध दिया। घड़े में अँधेरा हो गया। बाहर चाँदनी रात थी, मगर घड़े 'लोरीकीट' को लगा कि रात अँधेरी है। फिर उस किसान ने घड़े पर धीरे-धीरे थाप मार आरंभ किया। लोरीकीट को लगा कि बादल गरज रहे हैं। फिर किसान ने घड़े पर बँधे कपड़े प पानी गिराया। हल्की-हल्की फुहार लोरीकीट के शरीर पर पड़ी। उसने समझा रिमझिम वर्षा रही है। दूसरे दिन मुकदमे की सुनवाई थी। पड़ोसी ने गवाही के रूप में लोरीकीट को बुलाय जज ने लोरीकीट से पूछा– "किसान का यह पड़ोसी कहता है कि किसान ने उसकी भैंस चु ली है। इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है? क्या यह बात सही है?"

लोरीकीट ने आँखों देखी हुई सारी घटना ज्यों की त्यों उन्हें सुना दी। इस पर पड़ोसी बहु प्रसन्न हुआ। किंतु किसान ने जज साहब से कहा– "यह पक्षी प्रायः झूठ बोलता है। इस विश्वास नहीं किया जा सकता।"

जज ने पूछा– "पक्षी झूठ बोलता है, इसका क्या प्रमाण है?"

किसान ने कहा– "आप इससे कोई दूसरा प्रश्न करें, तो दूध का दूध और पानी का पानी जाएगा। लो, मैं ही पूछ लेता हूँ– लोरीकीट! बता, कल रात का मौसम कैसा था?"

लोरीकीट ने जवाब दिया– "रात अँधेरी थी। बादल गरज रहे थे, पानी भी बरसा था।" लोरीकीट का जवाब सुनकर सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। जज और अन्य लोगों ने समझ लिया कि लोरीकीट झूठ बोलता है, क्योंकि पिछली रात तो चाँदनी रात थी। न बादल गरजे थे, न पानी बरसा था।"

जज ने किसान को निर्दोष समझकर छोड़ दिया। उस दिन से लोगों ने समझ लिया कि लोरीकीट झूठा पक्षी है, इसे पालना नहीं चाहिए। सबने पिंजड़ों के दरवाज़े खोल दिए। अपमानित होकर लोरीकीट जंगल में उड़ गया। अपमान का दुख कम नहीं होता। इस दुख से दुखी होकर वह मारा-मारा फिरता रहा।

एक दिन उसकी भेंट हरे रंग के एक पक्षी से हुई। उस नए पक्षी ने अपना परिचय देते हुए कहा– "मेरा नाम तोता है। मैं मनुष्यों की बोली दुहरा सकता हूँ। उनकी बोली में बात भी कर सकता हूँ। मैं मनुष्यों के एक अच्छे देश की तलाश में हूँ, जहाँ सम्मान से रह सकूँ।"

लोरीकीट ने कहा– "जो गुण तुम में है, वही गुण तो मुझमें भी है। इसीलिए तो

एक किसान ने मुझे प्रेम से पाला था, पर अब उसने मुझे अपमानित करके निकाल दिया। मैं अब मनुष्यों के बीच रहने के लिए कभी नहीं जाऊँगा। अगर तुम जाना चाहते हो, तो जाओ रोकता नहीं किंतु अगर वहाँ कुशलतापूर्वक रहना चाहते हो, तो मेरी एक सीख मान लेना।''

बड़ी उत्सुकता से तोते ने पूछा– ''वह सीख क्या है?''

लोरीकीट ने अपना सारा किस्सा सुनाकर कहा– ''मनुष्यों के बीच रहते समय तुम उनकी बो को ही दुहराते रहना। जैसा वे कहें, वैसा ही कहते रहना। कभी भूलकर भी अपनी ओर से कु न कहना, वरना मेरी जो हालत हुई है, वही तुम्हारी भी होगी।''

लोरीकीट की सीख को तोते ने ध्यान से सुना। उसे धन्यवाद दिया और मनुष्यों की बस्ती ओर उड़ चला। जब मनुष्यों को यह मालूम हुआ कि लोरीकीट से अधिक सुंदर एक पक्षी अ है, जो उनकी बोली बोल सकता है, तो उन्होंने बड़े स्नेह से उसे घर में पाल लिया। तोते उसके वंशजों ने आज तक लोरीकीट पक्षी की सीख को नहीं भुलाया। वे मनुष्यों की बोली केवल दुहराते हैं, अपनी ओर से कुछ भी नहीं कहते।

—थाइलैंड की लोकक

प्राचीन काल - बीता हुआ समय; अस्वीकार करना - किसी बात को न मानना; अदालत - न्यायालय; विश्वास - भरोसा; क्रोध - गुस्सा; प्रायः - अकसर; सिद्ध - साबित; तलाश - खोज।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारि

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) मनुष्य की बोली की नकल करने वाले पक्षी हैं–

(i) चिड़िया ( ) (ii) तोता-मैना ( )

(ख) किसान के खेत को चर लिया–

(i) बकरियों ने ( ) (ii) पड़ोसी की भैंस ने( )

(ग) किसान ने लोरीकीट को पिंजरे से निकालकर बंद कर दिया–

(i) घड़े में ( ) (ii) डिब्बे में ( )

(घ) अपमानित होकर लोरीकीट–

(i) जंगल में उड़ गया ( ) (ii) ने बदला लिया ( )

2. **सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य कथन के सामने ✗ लगाओ–**

(क) लोरीकीट ने अदालत में जानबूझकर झूठ कहा। ( )

(ख) लोगों ने लोरीकीट को झूठा समझा। ( )

(ग) लोरीकीट को मैना ने समझाया। ( )

(घ) लोरीकीट की सीख को तोते ने ध्यान से सुना। ( )

3. **किसने कहा–**

(क) "मैंने तुम्हारी भैंस नहीं देखी।" .....

(ख) "पक्षी झूठ बोलता है, इसका क्या प्रमाण है?" .....

(ग) "लोरीकीट! बता, कल रात का मौसम कैसा था?" .....

(घ) "मै मनुष्यों के एक अच्छे देश की तलाश में हूँ।" .....

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) लोरीकीट में क्या करने की क्षमता थी?

.....

.....

(ख) किसान को भैंस पर क्रोध क्यों आया?

.....

.....

(ग) किसान ने लोरीकीट को पिंजरे से निकालकर घड़े में बंद क्यों कर दिया?

.....

.....

(घ) लोरीकीट ने तोते को क्या समझाया?

.....

.....

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–

(क) बोली – .....

(ग) शाखा – .....

(ङ) घड़ा – .....

(छ) घटना – .....

(झ) किस्सा – .....

(ख) लोककथा – .....

(घ) युक्ति – .....

(च) कपड़ा – .....

(ज) रात – .....

(य) बस्ती – .....

2. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–

(क) गुण	(i) सच्चा
(ख) प्राचीन	(ii) अस्वीकार
(ग) स्वीकार	(iii) अवगुण
(घ) झूठा	(iv) अप्रसन्न
(ङ) प्रसन्न	(v) नवीन

3. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) गुण – .....

(ख) क्रोध – .....

(ग) सबूत – .....

(घ) युक्ति – .....

(ङ) अपमान – .....

कुछ करने के लिए

- यदि आप लोरीकीट की जगह होते तो अपने को सच्चा साबित करने के लिए क्या करते?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

- पशु-पक्षियों को पिंजरे में रखना क्या सही है? बताइए—

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11 कबीर के दोहे

सरल-सीधी बात को स्पष्ट रूप में कह देने की कला विरले कवियों में ही होती है– प्रायः वे उच्चकोटि के भक्त होते हैं।

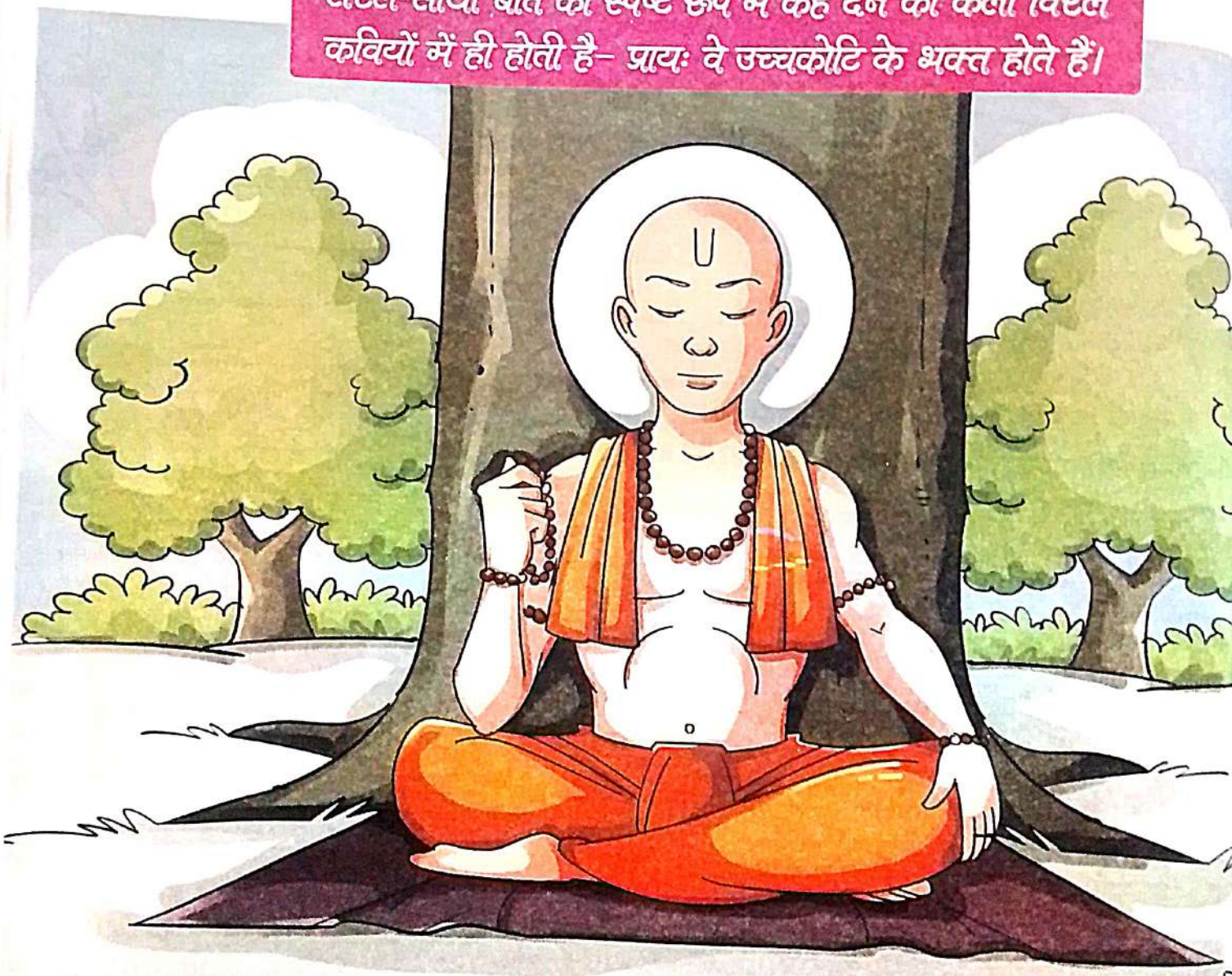

अध्यापन संकेत

- प्रत्येक दोहे में एक गंभीर भाव छुपा होता है। दोहों के अर्थ स्पष्ट रूप से समझाएँ।

(दोहे)

- कबीरदास जी ऐसे संत कवि हुए है, जिन्होंने हमें सच्चे धर्म के रास्ते पर चलना सिखाया। उनके द्वारा रचे गए इन दोहों में बड़ी सुंदर सीख दी गई है–

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करे, आपहुँ सीतल होय।।

दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुख काहे को होय।।

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करैगो कब।।

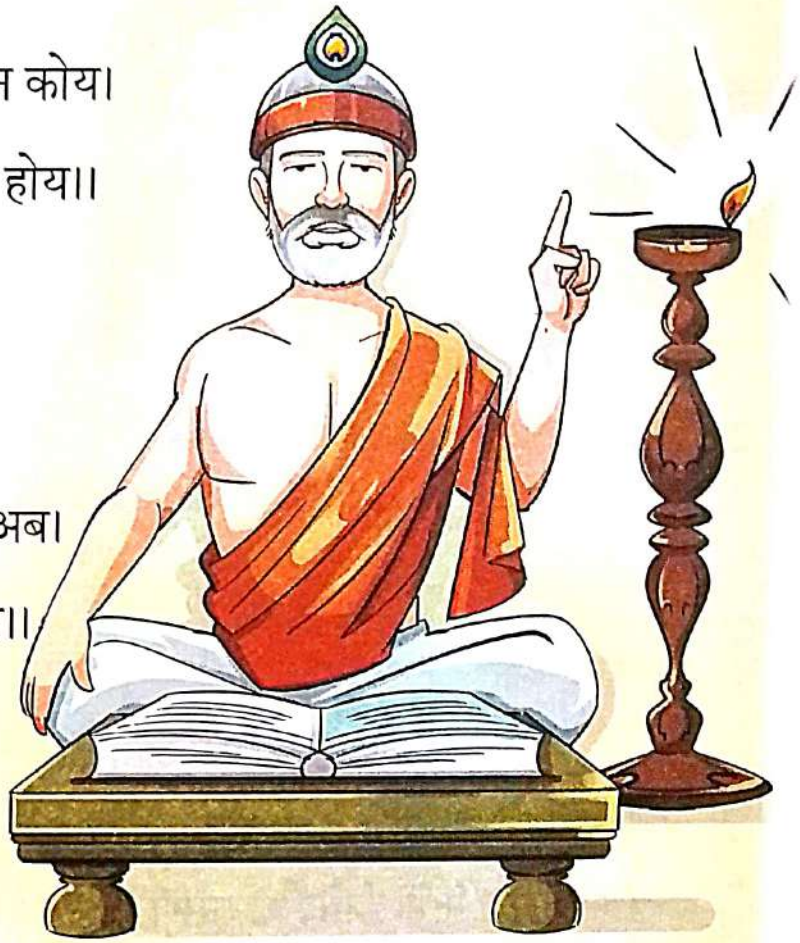

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।

शब्द–अर्थ

बानी - बोली; सुमिरन - याद करना; परलय - प्रलय; आपा - घमंड; साँच - सच; बहुरि - फिर; औरन - दूसरों को; हिरदै - हृदय; तप - तपस्या।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए–

(i) जिससे दूसरे भड़के ( ) (ii) जिससे दूसरे को शीतलता मिले ( )

(ख) प्राय: सभी लोग ईश्वर का स्मरण करते हैं–

(i) दुख में ( ) (ii) सुख में ( )

(ग) तप है–

(i) सच बोलना ( ) (ii) झूठ बोलना ( )

(घ) गोविंद से अर्थ है–

(i) कृष्ण ( ) (ii) ईश्वर ( )

2. दोहा पढ़कर रिक्त स्थान भरो–

(क) काल करै सो ..... अब।

..... करैगो कब।।

(ख) अति का भला ..... चूप।

..... बरसना अति की भली न ..... ।।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) सुख में भी ईश्वर का स्मरण रखने वालों को क्या नहीं होता?

.....

.....

(ख) सबसे बड़ा पाप किसे बताया गया है?

.....

.....

(ग) आज का काम कल पर क्यों नहीं टालना चाहिए?

.....

.....

(घ) किन-किन बातों की अधिकता अच्छी नहीं होती है?

.....

.....

1. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखो–

(i) खोय ..... (ii) पाँय .....

(iii) पाप ..... (iv) चूप .....

(v) अब ..... (vi) कोय .....

2. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–

(क) शीतल	(i) पुण्य
(ख) पाप	(ii) सच
(ग) आज	(iii) दुख
(घ) झूठ	(iv) कल
(ङ) सुख	(v) गर्म

3. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो–

(क) गुरु – .....

(ख) उपकार – .....

(ग) प्रलय – .....

(घ) शीतल – .....

कुछ करने के लिए

- किसी एक दोहे को अर्थ सहित लिखकर कक्षा में लटकाओ।
- विद्यालय मंच पर कबीरदास के इन दोहो को गाकर सुनाओ।
- इन कवियों ने भी सुंदर दोहे व पद लिखे हैं। इनके बारे में जानकारी इकट्ठा करो–

(क) रहीमदास

(ख) तुलसीदास

(ग) सूरदास

(घ) मीराबाई

12 मेरी अधूरी यात्रा

अनजान जगहों पर जाने में खतरा तो होता है, पर उससे साहस भी बढ़ता है। क्या अपने यह अनुभव किया है?

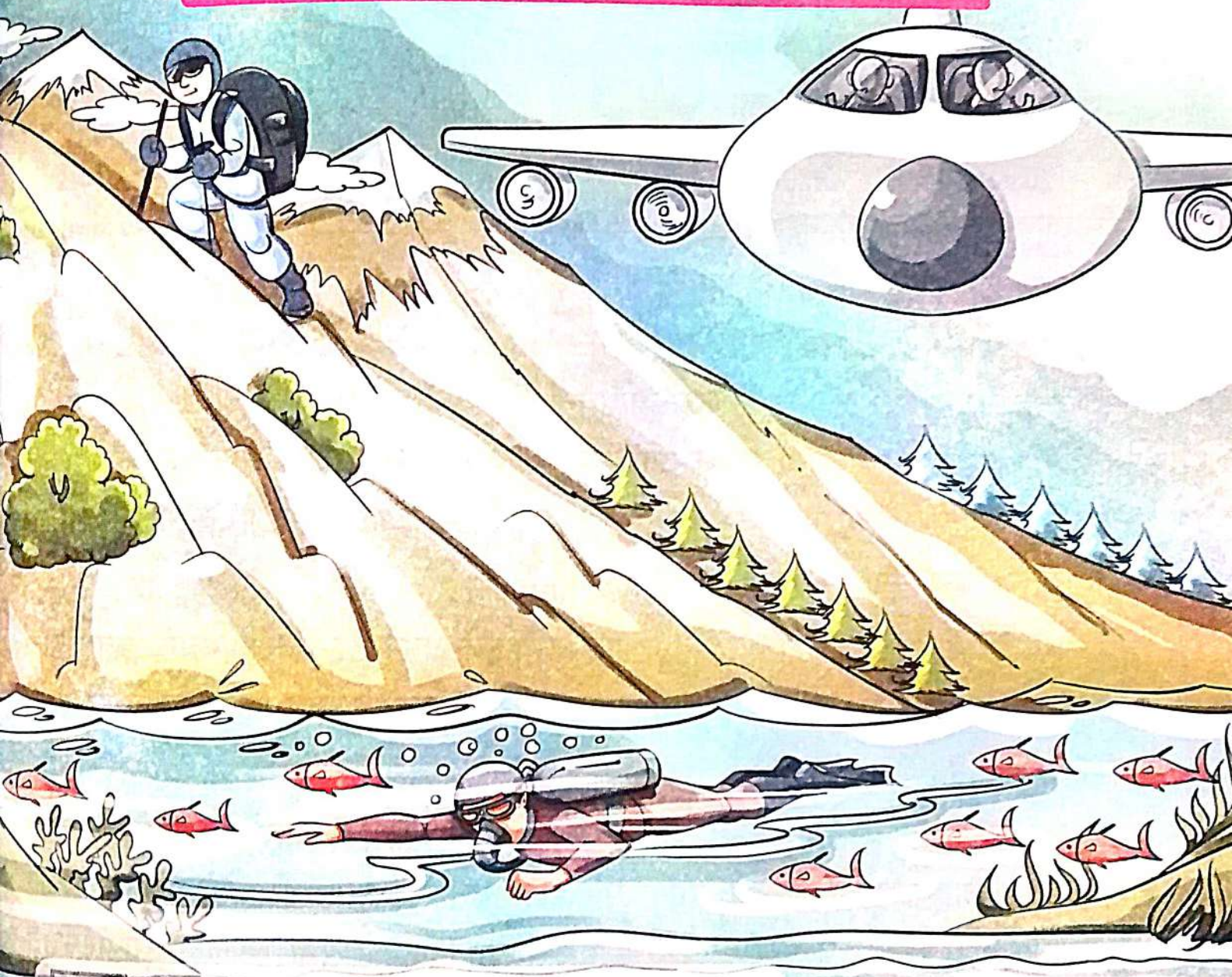

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि किस प्रकार नेहरू जी ने अपने अनेक अनुभव लिखकर सबके साथ बाँटे हैं।

(संस्मरण)

- यहाँ नेहरू जी ने अपनी एक यात्रा का विवरण दिया है। यह एक रोमांचक यात्रा थी, जो बर्फीले पहाड़ों के बीच गई थी।

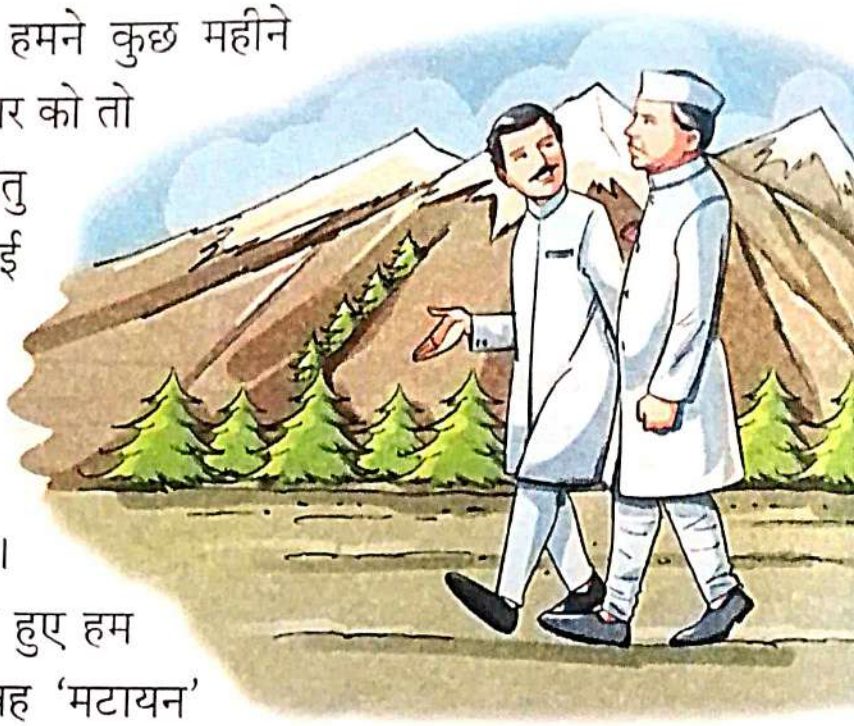

1916 में अपने विवाह के बाद हमने कुछ महीने कश्मीर में बिताए। मैंने अपने परिवार को तो श्रीनगर की घाटी में छोड़ दिया, परंतु मैं अपने एक चचेरे भाई के साथ कई हफ़्तों तक पहाड़ों पर घूमता रहा और घूमते हुए लद्दाख तक पहुँच गया। इस यात्रा में मुझे एक दिल दहला देने वाला अनुभव हुआ। जोज़िला घाटी से आगे सफ़र करते हुए हम एक जगह पहुँचे। मेरे ख्याल से वह 'मटायन' कहलाती थी। हमसे कहा गया था कि अमरनाथ की गुफा यहाँ से सिर्फ़ आठ मील दूर है। ठीक था कि बीच में हिम से ढका हुआ एक बड़ा पहाड़ पड़ता था, जिसे पार करना था। लेकि उससे क्या? आठ मील होते ही क्या हैं?

हम लोगों में जोश खूब था, किंतु अनुभव नदारद! हमने अपने डेरे-तंबू जो ग्यारह हज़ार फ सौ फुट की ऊँचाई पर थे, छोड़ दिए। हम एक छोटे से दल के साथ पहाड़ पर चढ़ने ल रास्ता दिखाने के लिए हमारे साथ वहीं रहने वाला एक गड़रिया था।

हम लोगों ने रस्सियों की साँकल–सी बनाकर एक-दूसरे को बाँध लिया। ऐसे ही बँधे हुए हम कई बर्फ़ीली नदियों को पार किया। हमारी मुश्किलें बढ़ती गईं तथा साँस लेने में भी कठिना होने लगी। सामान उठाने वालों में से कुछ के मुँह से खून निकलने लगा, हालाँकि उन पर बहु बोझ नहीं था। इधर बर्फ पड़ने लगी और बर्फ़ीली नदियाँ भयानक रूप से रपटीली हो गईं। ह लोग बुरी तरह थक गए थे। एक-एक कदम आगे बढ़ाने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़त

थी, लेकिन फिर भी हम आगे बढ़ते ही गए। हमने अपना खेमा सुबह चार बजे छोड़ा था। बारह बजे तक लगातार चढ़ते रहने के बाद हमें एक विशाल हिम-सरोवर देखने का सौभाग्य मिला। वहाँ का दृश्य बहुत ही सुंदर था। उसके चारों ओर बर्फ़ से ढकी पर्वत-चोटियाँ थी, मानों देवताओं का मुकुट हो अथवा अर्धचंद्र हो, परंतु ताज़ा बर्फ और कुहरे ने शीघ्र ही इस दृश्य को हमारी आँखों से ओझल कर दिया। पता नहीं कि हम कितनी ऊँचाई पर थे। लेकिन मेरा ख्याल है कि हम लोग कोई पंद्रह-सोलह हज़ार फुट ऊँचाई पर ज़रूर होंगे, क्योंकि हम अमरनाथ की गुफ़ा से बहुत ऊँचे थे। अब हमें इस सरोवर को, जोकि लगभग आधा मील लंबा होगा, पार करके दूसरी तरफ़ नीचे गुफ़ा की ओर जाना था।

हम लोगों ने सोचा कि चढ़ाई खत्म होने से हमारी मुश्किलें भी खत्म हो गई होंगी। यही कारण था कि बहुत थके होने पर भी, हम लोगों ने हँसते हुए यात्रा की यह मंजिल भी तय करनी शुरू की। इसमें बड़ा धोखा था, क्योंकि वहाँ दरारें बहुत-सी थीं और ताज़ा गिरने वाली बर्फ़ खतरनाक दरारों को ढक देती थी। इस नई बर्फ़ ने मेरा करीब-करीब खात्मा ही कर दिया होता, क्योंकि एक जगह मैंने ज्यों ही उसके ऊपर पैर रखा, वह नीचे को खिसक गई

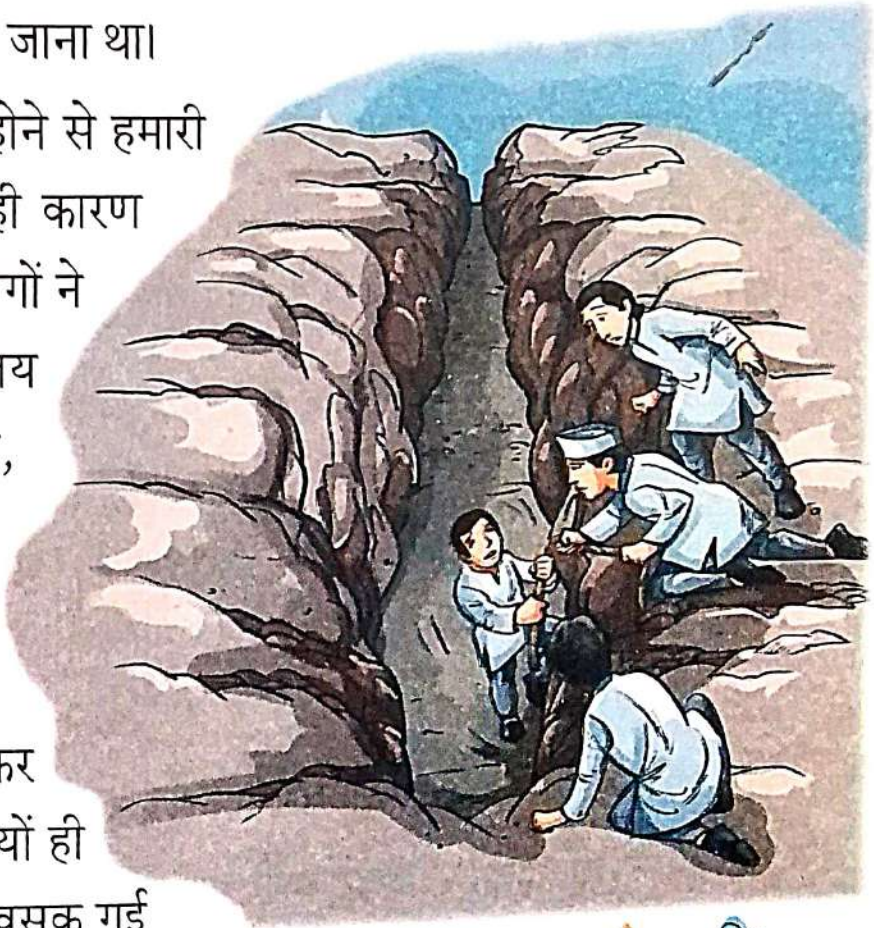

और मैं धम्म से एक बड़ी दरार में जा गिरा। यह दरार बहुत बड़ी थी और कोई भी चीज़ उस बिलकुल नीचे पहुँच सकती थी, लेकिन मेरे हाथ से रस्सी नहीं छूटी। मैं दरार की बाजू पकड़े रहा और ऊपर खींच लिया गया। इस घटना से हम लोगों के होश तो उड़ गए थे, फि भी हम लोग आगे चलते गए। लेकिन दरारों की तादाद और उनकी चौड़ाई आगे जाकर अ भी बढ़ गई। इनमें से कुछ को पार करने के कोई साधन भी हमारे पास नहीं थे। इसलिए अंत हम लोग थके-हारे हताश ही लौट आए। इस प्रकार अमरनाथ की गुफ़ा अनदेखी ही रह गई।

—जवाहरलाल नेह

चचेरा भाई - चाचा का बेटा; हिम - बर्फ़; गड़रिया - भेड़, बकरियाँ चराने वाला; रपटीली फिसलन वाली; हताश - निराश; हफ़्ता - सप्ताह; जोश - उत्साह; बोझ - वज़न; तादाद - संख्या

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारि

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) नेहरू जी ने अपने परिवार को छोड़ दिया–

(i) होटल में ( ) (ii) श्रीनगर की घाटी में ( )

(ख) नेहरू जी को रास्ता दिखाने के लिए था–

(i) गाइड ( ) (ii) गड़रिया ( )

(ग) पर्वत चोटियाँ ऐसे लग रहीं थी, जैसे–

(i) बर्फ़ का मुकुट हो ( ) (ii) झंडे हों ( )

(घ) नेहरू जी ने कहा कि उनके होश उड़ गए–

(i) दरार में गिरने से ( ) (ii) पर्वत पर चढ़ने से ( )

2. सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य कथन के सामने ✗ लगाओ–

(क) नेहरू जी पहाड़ों पर अपने चचेरे भाई के साथ घूमते रहे। ( )

(ख) नेहरू जी ने रस्सियों से चारपाई बनाई। ( )

(ग) पहाड़ों की चोटियों का सुंदर दृश्य कुहरे में ओझल हो गया। ( )

(घ) दरारों के होने से यात्रा में कोई परेशानी नहीं हुई। ( )

निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर लिखो–

3. (क) बर्फ़ीली नदियों को नेहरू जी ने कैसे पार किया?

.....

.....

(ख) नेहरू जी को क्या धोखा हुआ?

.....

.....

(ग) क्या नेहरू जी अमरनाथ की गुफा देख पाए?

.....

.....

भाषा की बात

1. **निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–**

(क) ताज़ा	(i) दानव
(ख) देवता	(ii) दुर्भाग्य
(ग) सौभाग्य	(iii) सुगमता
(घ) कठिनाई	(iv) लघु
(ङ) विशाल	(v) बासी

2. **समझकर लिखो–**

(क) हताश – .....हताशा..... (ख) निराश – .....

(ग) खिसिया – ..... (घ) उकता – .....

(ङ) झुँझला – ..... (च) चौड़ा – .....

3. **उदाहरण के अनुसार क्रिया शब्दों से वाक्य बनाओ–**

(देखना) – सुंदर दृश्य **देखकर** यात्री प्रसन्न हुए।

(सूँघना, चलना, नाचना, गाना, पढ़ना)

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

चर्चा आधारित

कुछ करने के लिए

- अपने द्वारा की गई किसी यात्रा का वर्णन करो।
- अमरनाथ की गुफा क्यों प्रसिद्ध है?
- बर्फ़ीले प्रदेशों में घूमने के अनुभव का वर्णन किसी ऐसे व्यक्ति से सुनो, जो प्रायः ऐसे प्रदेशों की यात्रा करता हो।

13 हौसले बड़े इनके

परिश्रम करके अपना जीवन चलाने की सीख हमें छोटे-छोटे प्राणियों से भी मिलती है–

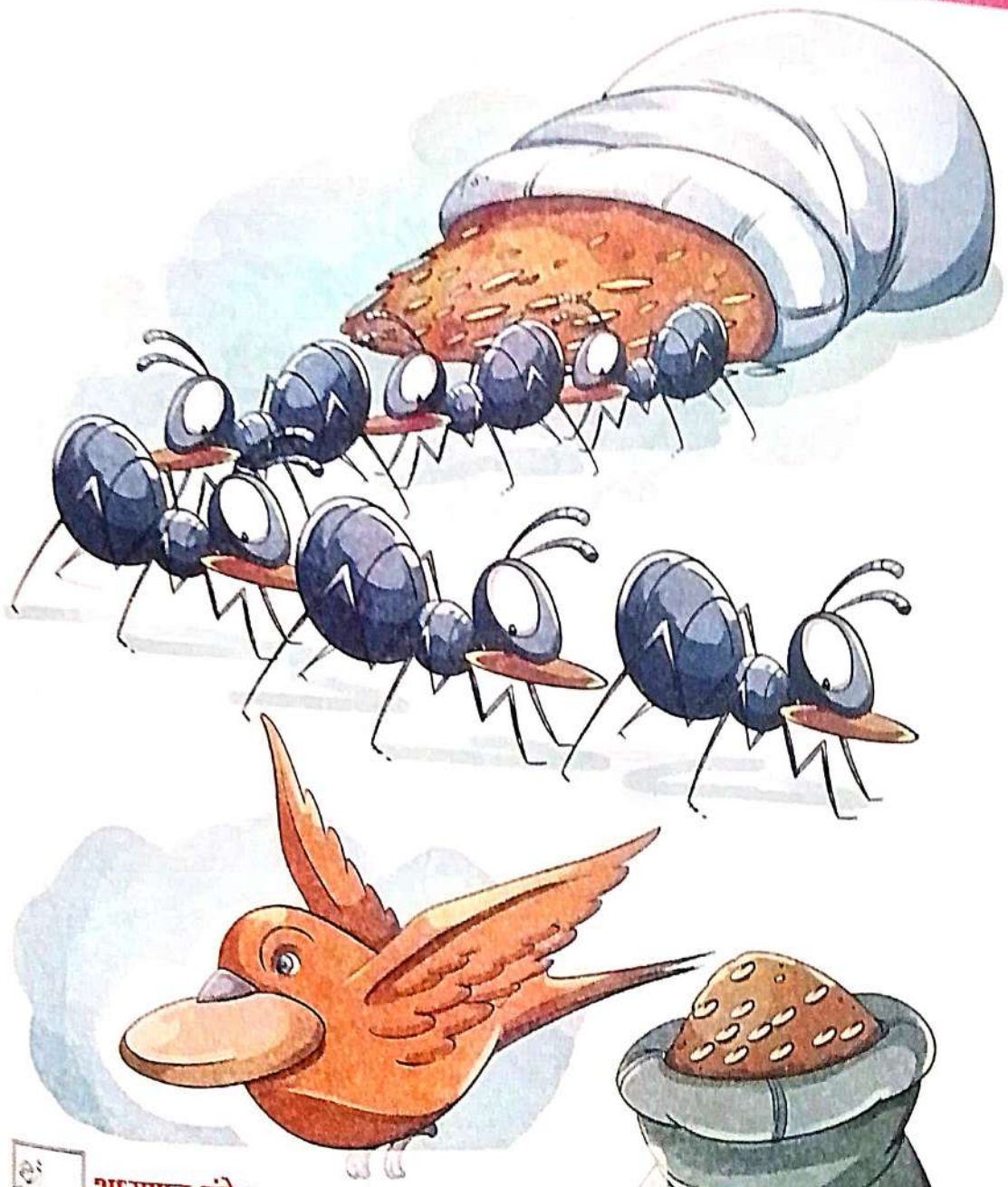

अध्यापन संकेत

- कविता के माध्यम से अपने आस-पास के लघु प्राणियों के जीवन के निरीक्षण की प्रेरणा दें।

(कविता)

- परिश्रम जीवन का आधार है। चीटियाँ इसका साक्षात उदाहरण है। वे लगातार मेहनत करने में जुटी रहती हैं। इस कविता में उनकी इसी विशेषता पर प्रकाश डाला गया है।

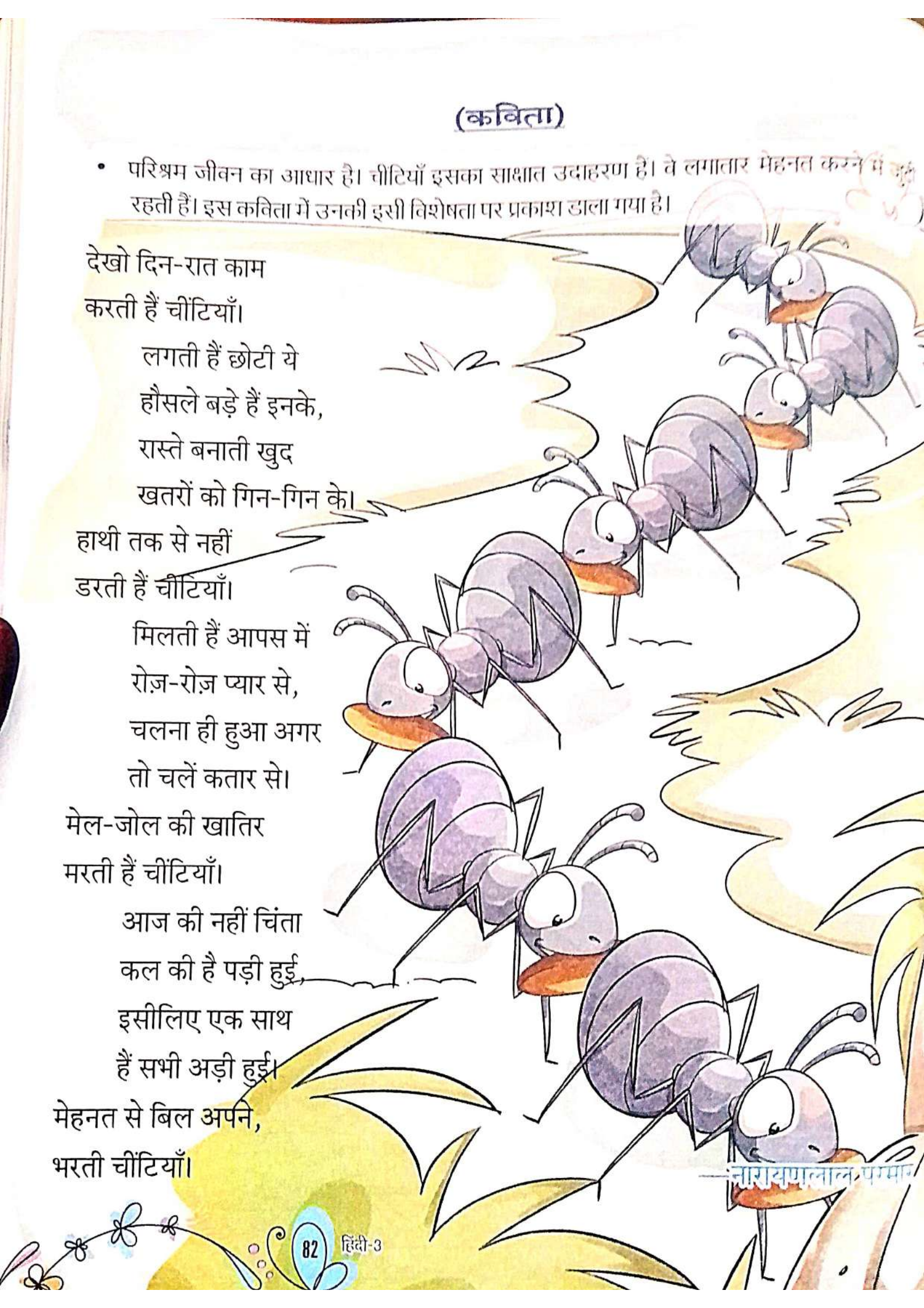

देखो दिन-रात काम
करती हैं चींटियाँ।
लगती हैं छोटी ये
हौसले बड़े हैं इनके,
रास्ते बनाती खुद
खतरों को गिन-गिन के।
हाथी तक से नहीं
डरती हैं चींटियाँ।
मिलती हैं आपस में
रोज़-रोज़ प्यार से,
चलना ही हुआ अगर
तो चलें कतार से।
मेल-जोल की खातिर
मरती हैं चींटियाँ।
आज की नहीं चिंता
कल की है पड़ी हुई,
इसीलिए एक साथ
हैं सभी अड़ी हुई।
मेहनत से बिल अपने,
भरती चींटियाँ।

—नारायणलाल परमार

शब्द-अर्थ हौसले - साहस; कतार - पंक्ति; अड़ी - अडिग; खतरों - मुश्किलों; खातिर - लिए।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) चींटियाँ रात-दिन करती हैं–

(i) आराम ( ) (ii) काम ( )

(ख) चींटियाँ अपना रास्ता–

(i) खुद बनाती हैं ( ) (ii) बनवाती हैं ( )

(ग) चींटियाँ आपस में–

(i) प्यार करती हैं ( ) (ii) लड़ती हैं ( )

(घ) चींटियों को चिंता रहती है–

(i) केवल आज की ( ) (ii) कल की (भविष्य की) ( )

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कविता पढ़कर करो–**

(क) लगती हैं ....

.... इनके

रास्ते बनाती ....

.... गिन के

(ख) मिलती है ....

.... प्यार से

चलना ही ....

.... कतार से

3. सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य कथन के सामने ✗ लगाओ–

(क) चींटियाँ चुस्त होती हैं। ( )

(ख) चींटियाँ प्राय: झगड़ती हैं। ( )

(ग) चींटी ने चींटियों की बुराई की है। ( )

(घ) चींटी हमें कुछ नहीं सिखातीं। ( )

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के तुकांत शब्द लिखो–

(क) इनके ..... (ख) पड़ी .....

(ग) प्यार ..... (ग) डरती .....

2. निम्नलिखित श्ब्दों को उनसे संबंधित शब्दों से मिलान करो–

(क) मेहनत	(i) फ़िक्र
(ख) चिंता	(ii) संकट
(ग) खतरा	(iii) भविष्य
(घ) कल	(iv) परिश्रम

3. नीचे दिए गए रंगीन शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य पूरे करो–

(क) परिश्रमी को सफलता मिलती है ..... नहीं।

(ख) प्यार में ही प्रसन्नता तथा ..... में दुख है।

(ग) अच्छी बातों की प्रशंसा होती है, किंतु बुरी आदतों की सब ..... करते हैं।

(घ) लघु प्राणियों से भी प्रेरणा ली जा सकती है, आवश्यक नहीं कि कोई ..... ही प्रेरणा दे।

कुछ करने के लिए

- दी गई विशेषताओं में जो चींटी के विषय में सही हो, उनके सामने ✓ लगाओ–

मेहनती	☐	सुंदर	☐
हृष्ट-पुष्ट	☐	मेल-जोल रखने वाली	☐
घमंडी	☐	सुस्त	☐

- चींटी एक कीट है। आगे कुछ कीटों और पक्षियों के नाम दिए गए हैं, उन्हें अलग-अलग लिखो।

टिड्डी	तोता	गौरैया	कॉक्रोच	चींटी
मैना	ततैया	बुलबुल	कबूतर	चिड़िया

कीट – ....

चिड़िया – ....

ज़रा बताइए–

- अगर चींटी काट ले, तो क्या करना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

- चींटी से आपने कुछ सीखा। इनसे आप क्या सीखते हो?

(क) कोयल – .....

.....

.....

(ख) गिलहरी – .....

.....

.....

(ग) कुत्ता – .....

.....

.....

(घ) चिड़िया – .....

.....

.....

(ङ) घोड़ा – .....

.....

.....

(च) हाथी – .....

.....

.....

14 प्यारी सिंड्रेला

परी लोक की जादुई दुनिया के सपने हर देश के बच्चे प्रायः देखते ही हैं। क्या आपने भी परी कथाएँ सुनी हैं?

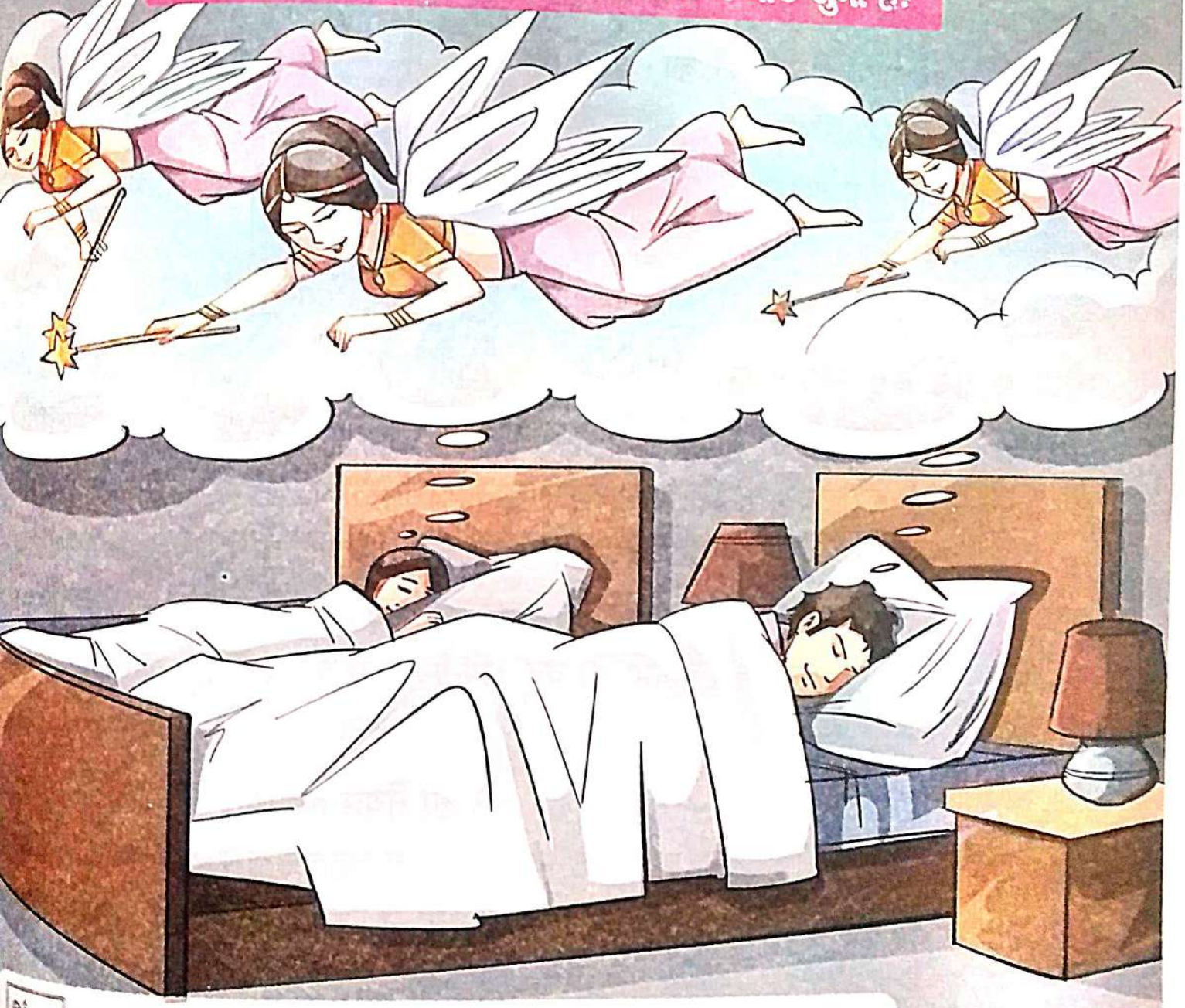

अध्यापन संकेत

- पाठ के माध्यम से बच्चों को बताएँ कि किस प्रकार अच्छे लोगों की सहायता किसी न किसी प्रकार से होती ही रहती है।

(कहानी)

- सिंड्रेला की कहानी हर देश में विख्यात है, यह एक ऐसी अनाथ लड़की की कहानी है जो अपनी सौतेली माँ और बहनों के अत्याचारों की शिकार थी। उसका भाग्य एक परी ने कैसे बदल दिया, आओ जानें—

बहुत पुरानी बात है। एक देश में एक छोटी-सी प्यारी लड़की थी– सिंड्रेला। उसकी अपनी माँ नहीं थी। सौतेली माँ सिंड्रेला को नौकरानी की तरह रखती थी। सिंड्रेला फटे-पुराने कपड़े पहनती और घर का सारा काम करती थी। उसकी दो सौतेली बहनें भी उसके साथ बुरा बर्ताव करती थीं।

एक दिन उस देश के राजा के महल में एक बड़े उत्सव का आयोजन किया गया। उसमें शामिल होने के लिए बड़े-बड़े लोगों को निमंत्रण भेजा गया था। सिंड्रेला की बहनों को भी बुलाया गया। वे दिन-रात उत्सव के बारे में बातें किया करती थीं कि कैसे सजेंगी, कैसे कपड़े पहनेंगी, क्या-क्या तैयारियाँ करेंगी। बहनों का उत्साह देख-देखकर सिंड्रेला का भी मन उत्सव में जाने का था, लेकिन उसके पास नए कपड़े नहीं थे। वह अपनी बहनों की बातें सुनकर चुपचाप रोती रहती थी।

सिंड्रेला को छोड़कर पूरा परिवार उत्सव में जाने के लिए तैयार हो गया। फिर सभी लोग बग्घी में सवार होकर चले गए। दरवाज़े पर खड़ी प्यारी सिंड्रेला बहुत उदास थी। वह अपने आँसू रोक न सकी। उसी समय आकाश से एक परी जा रही थी, वह सिंड्रेला की आँखों में आँसू देखकर रुक गई।

परी ने सिंड्रेला के पास आकर कहा– "रोओ मत, बेटी। क्या तुम उत्सव में जाना चाहती हो?"

"हाँ"- सिंड्रेला ने कहा।

परी बोली, "मैं तुम्हारी मदद करूँगी। चलो, मुझे बगीचे से एक बड़ा कद्दू लाकर दो।"

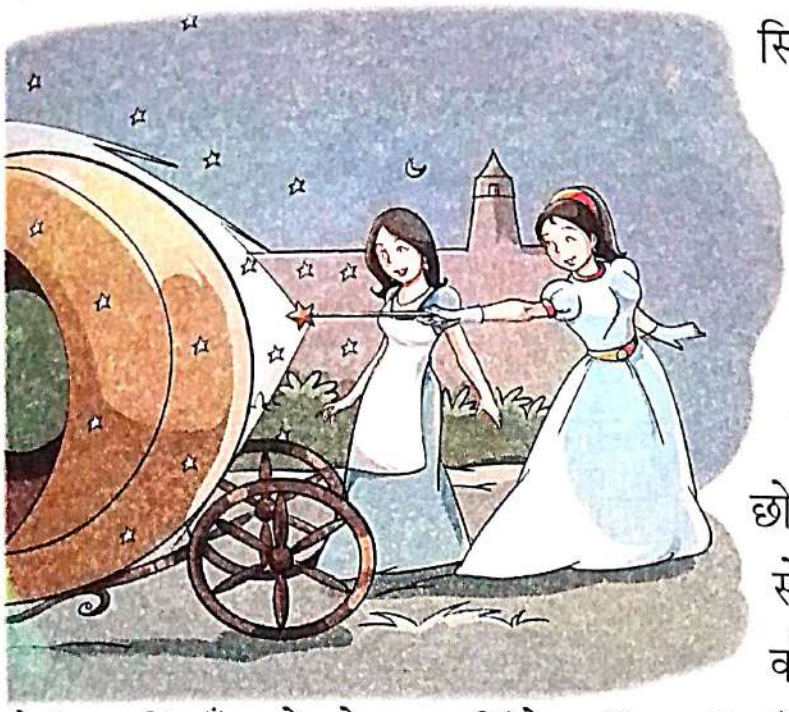

सिंड्रेला कद्दू ले आई। परी ने अपनी छड़ी घुमाकर कद्दू को सुंदर रथ में बदल दिया। अब परी सिंड्रेला से बोली, "जाओ, एक चूहेदानी ले आओ।" सिंड्रेला ने 'हाँ' मैं गर्दन हिलाई और रसोईघर से चूहेदानी ले आई। उसमें छह छोटे और एक बड़ा चूहा बंद था। परी ने छड़ी से छोटे चूहों को सफ़ेद घोड़ों और बड़े चूहे को सारथी बना दिया। फिर परी ने सिंड्रेला से छिपकलियाँ लाने को कहा। सिंड्रेला छिपकलियाँ ले आई। परी ने छिपकलियों को नौकरों में बदल दिया।

फिर परी ने छड़ी से सिंड्रेला के कपड़े सुंदर पोशाक में बदल दिए। उसके पैरों की चप्पलें भी हीरे-मोतियों से जड़ी सुंदर जूतियाँ बन गईं। सिंड्रेला की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। सिंड्रेला किसी राजकुमारी से कम नहीं लग रही थी। अब परी ने सिंड्रेला से उत्सव में जाने को कहा, पर उसे एक चेतावनी भी दी कि उसका जादू केवल रात के बारह बजे तक ही रहेगा, इसलिए उसे आधी रात से पहले ही उत्सव से लौटना होगा।

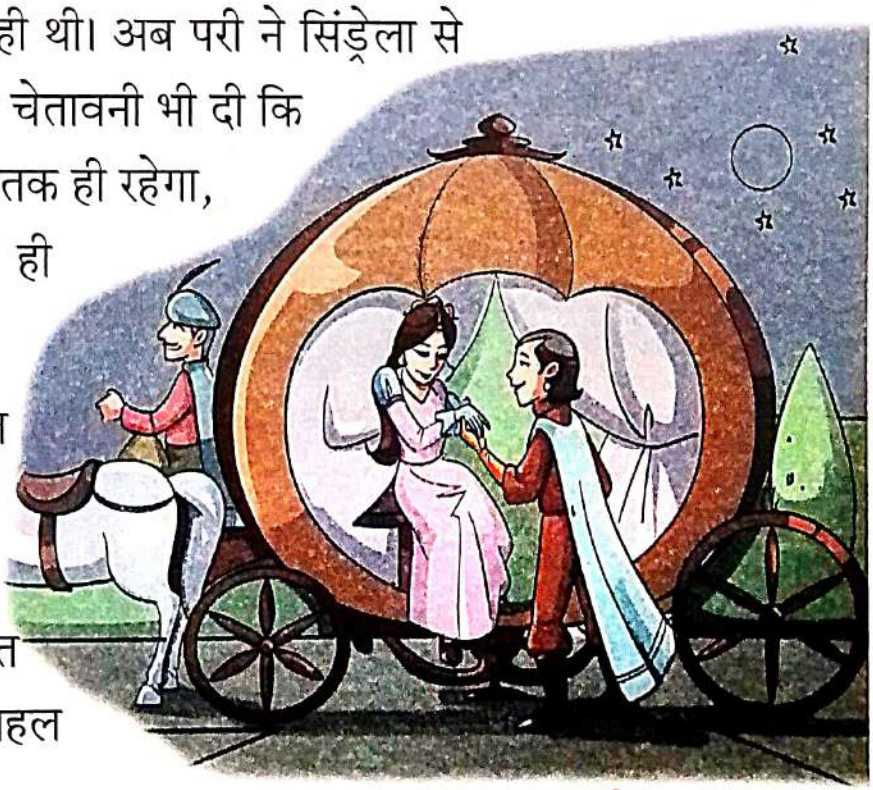

सिंड्रेला रथ में सवार होकर राजमहल की ओर चल पड़ी। जब सिंड्रेला महल के दरवाज़े पर रथ से उतरी, तो खुद राजकुमार ने उसका स्वागत किया। राजकुमार सिंड्रेला को लेकर महल

में पहुँचा, तो सबकी आँखें फटी-की-फटी रह गईं। सिंड्रेला की बहनें भी उसे न पहचान सकीं। राजकुमार सिंड्रेला की घंटों तक आवभगत करता रहा। फिर उसके साथ घंटों नृत्य करता रहा। सिंड्रेला उत्सव का आनंद उठा रही थी। तभी घड़ी में आधी रात का घंटा बजा। सिंड्रेला हड़बड़ाकर महल से भागी।

हड़बड़ाहट में उसकी एक जूती महल के दरवाज़े पर छूट गई। राजकुमार सिंड्रेला के पीछे दौड़ा, लेकिन उसे दूर फटे-पुराने कपड़े पहने एक लड़की दिखाई दी। सिंड्रेला की याद में राजकुमार बहुत उदास हो गया। कुछ देर बाद एक नौकर ने राजकुमार को सिंड्रेला की एक जूती लाकर दी। राजकुमार ने सैनिकों से कहा कि पता लगाओ, यह जूती किसकी है। सैनिक जूती लेकर नगर के हर घर में गए।

जब सैनिक जूती लेकर सिंड्रेला के घर पहुँचे, तो सिंड्रेला की बहनों ने जूती में पैर डाला, पर जूती उनके पैर में नहीं आई। यह देखकर उन्होंने मुँह बिचकाया। लेकिन जब सैनिकों ने सिंड्रेला से जूती में पैर डालने को कहा, तो बहनें ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगीं।

सिंड्रेला के पैर में जूती आ गई। यह देखकर उसकी बहनों का मुँह खुला-का खुला रह गया। जब सिंड्रैला दूसरी जूती निकाल लाई, तो सबको भरोसा हो गया कि सिंड्रेला ही वह लड़की है , जो महल में राजकुमार के साथ थी। सब यह देखकर हैरान रह गए।

सिंड्रेला को महल ले जाया गया। राजकुमार ने उससे विवाह कर लिया। इस तरह सिंड्रेला नौकरानी से राजकुमारी बन गई।

शब्द-अर्थ

आवभगत - खातिरदारी; आनंद - मज़ा; विवाह - शादी; चेतावनी - सावधान करना।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) सौतेली माँ सिंड्रेला को रखती थी–

(i) अपनी बेटी की तरह ( ) (ii) नौकरानी की तरह ( )

(ख) सिंड्रेला की बहनें रात-दिन बातें करती थीं–

(i) उत्सव के बारे में ( ) (ii) घर के काम-काज की ( )

(ग) परी ने सिंड्रेला से मँगाया–

(i) मर्तबान ( ) (ii) कद्दू ( )

(घ) सिंड्रेला नौकरानी से बनी–

(i) राजकुमारी ( ) (ii) सेठानी ( )

2. कोष्ठक में से उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

(क) उत्सव में जाने के लिए सिंड्रेला के पास ..... नहीं थे। (इत्र/नए कपड़े)

(ख) परी ने छोटे चूहों को ..... बना दिया। (घोड़े/हाथी)

(ग) सिंड्रेला का स्वागत खुद ..... ने किया। (प्रजा/राजकुमार)

(घ) सिंड्रेला के पैर में ..... आ गई। (पायल/जूती)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) सिंड्रेला कौन थी?

.....

.....

(ख) सिंड्रेला की माँ व बहनें उससे कैसा व्यवहार करती थीं?

.....

.....

(ग) परी ने सिंड्रेला को क्या चेतावनी दी थी?

.....

.....

(घ) राजकुमार ने सैनिकों को क्या पता लगाने को कहा?

.....

.....

1. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग लिखो–

(क) नौकर – ..... (ख) भाई – .....

(ग) राजकुमार – ..... (घ) बेटा – .....

(ङ) चूहा – ..... (च) घोड़ा – .....

2. निम्नलिखित शब्दों को सुमेलित करो–

(क) जादू की	(i) परी
(ख) दयालु	(ii) घोड़े
(ग) रथ के	(iii) छड़ी
(घ) घड़ी के	(iv) राजकुमार
(ङ) देश का	(v) घंटे

3. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। दिए गए वाक्यों में सर्वनाम शब्दों के नीचे रेखा खींचो–

(क) वह बड़ी दुखी थी।

(ख) उत्सव में जाने का उसका भी मन था।

(ग) उन्हें सिंड्रेला की कोई परवाह नहीं थी।

(घ) वे उससे ईर्ष्या करती थीं।

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- यदि आपको भी परी की कोई कहानी आती है, तो उसे कक्षा में सुनाओ।
- यदि किसी परी से आपकी भेंट हो जाए, तो आप उससे क्या कहेंगे? लिखो।

.....

.....

.....

.....

- इस चित्र में रंग भरो–

लालची बंदर

(कविता) पठन हेतु

एक समय की बात बताऊँ,
कई दिनों का भूखा बंदर।
खाने को, कुछ पा जाने को
घूम रहा था इधर-उधर।

दिया दिखाई उसको सूने
घर में रखा एक घड़ा।
और घड़ा भी भुने हुए
कुरमुरे चनों से भरा पड़ा।

दोनों हाथ साथ बंदर ने
फ़ौरन दिए घड़े में डाल।
चने भरी मुट्ठियों को वह,
लेकिन पाया नहीं निकाल।

घड़ा बहुत छोटे मुँह का था,
हाथ निकल न पाता था।
और लालची बंदरमल से
चना न छोड़ा जाता था।

फिर-फिर कोशिश करते-करते
बहुत लग गई उसको देर।
बस आ पहुँचे डंडा लेकर
घर के मालिक रामसुमेर।

अब खुद सोच तुम्हीं सकते हो,
बंदर पर जो कुछ बीता।
बच्चो, तुम यह बतलाओ
बंदर ने की क्या गलती?

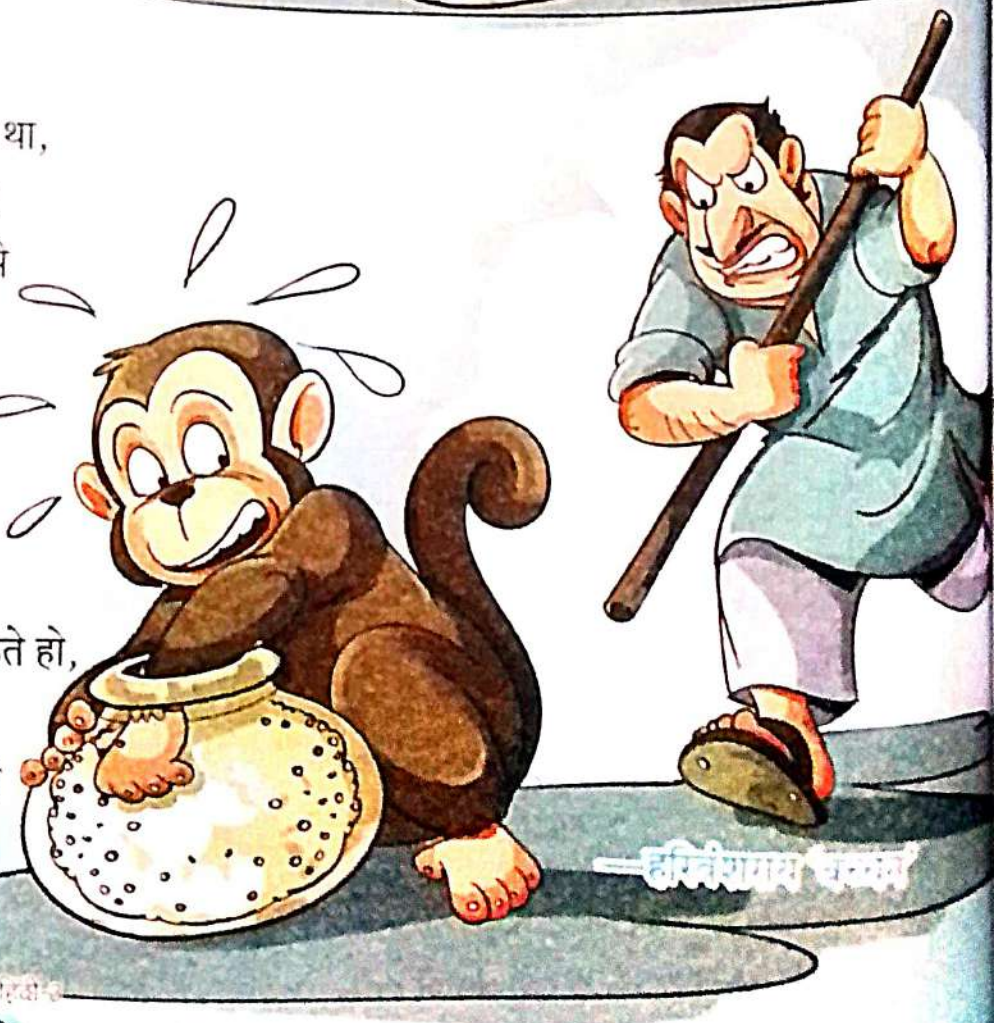

15 दशहरे की छुट्टियाँ

हर त्योहार के पीछे एक कहानी होती है, क्या आप यह बात जानते हैं?

अध्यापन संकेत

- पाठ में प्रयोग की गई प्रश्नोत्तर शैली में अन्य त्योहारों के विषय में भी परिचय कराएँ।

(दैनिक प्रसंग)

- भारत में अनेक त्योहार मनाए जाते हैं। दशहरा भी उनमें से एक है। आओ, इसके विषय में जानें –

रमन – दादी माँ, मेरी दशहरे की छुट्टियाँ पड़ गई हैं। ये छुट्टियाँ क्यों पड़ती हैं? दशहरे पर ऐसा क्या विशेष हुआ था?

दादी माँ – इस दिन राम ने रावण को मारकर सीता जी को उसकी चंगुल से छुड़वाया था। उसी की याद में यह त्योहार मनाते हैं।

रमन – पर रावण इतना बड़ा होता है, उसके भाई मेघनाथ, कुंभकर्ण भी बड़े-बड़े शक्तिशाली हैं। मुझे तो उनके पुतले देखकर ही डर लगता है। फिर राम ने उन्हें कैसे हरा दिया?

दादी माँ – बेटा, कोई कितना भी बड़ा क्यों न हो, लेकिन यदि वह अधर्म की राह पर चलेगा तो अवश्य हारेगा। राम भले ही दिखने में छोटे लगते हैं, पर उनके पास सच्चाई का बल था। साथ ही उन्हें माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त था। उनके साथ उनके ही जैसे भाई लक्ष्मण भी थे।

रमन – अच्छा तो यह बात है, जिन्हें माता-पिता का आशीर्वाद मिलता है, उन्हें कोई हरा नहीं सकता।

दादी माँ – हाँ, बिलकुल। लेकिन कभी-कभी बच्चे बहुत जिद और मनमानी करते हैं, अपने भाई-बहनों से भी झगड़ा आदि करते हैं, तब वे बाहर के लोगों का सामना नहीं कर पाते।

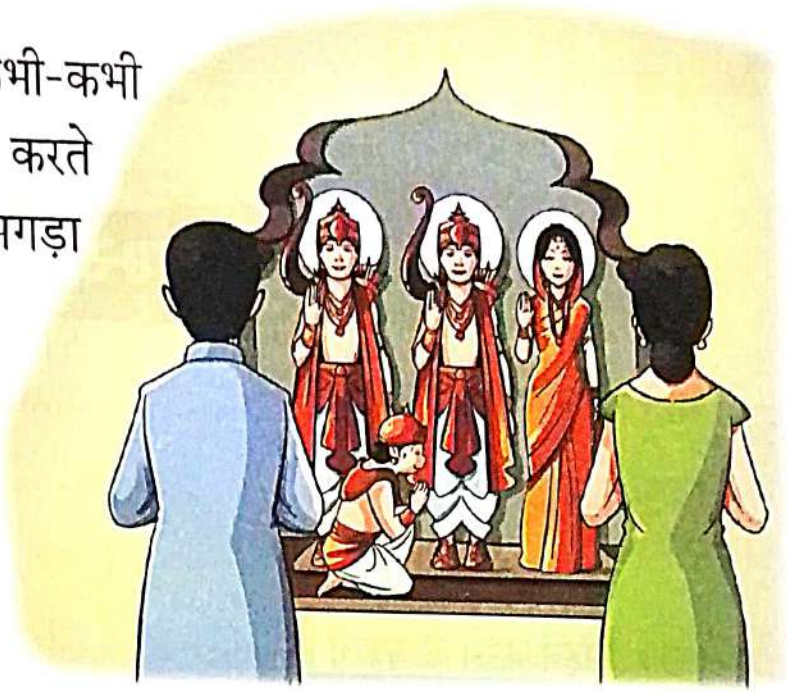

रमन – पर राम जैसा बनने के लिए तो बहुत कुछ सहना पड़ेगा?

दादी माँ – हाँ, पर सहन करने से सहनशक्ति बढ़ती है और झगड़ा करने से शक्ति घटती है। हाँ, यदि कोई तुम्हें बेकार ही परेशान करे या सताए, तो उसका मुकाबला तो करना ही होगा। वैसे प्रेम से व्यवहार करना ही उत्तम है।

रमन – आपको रामचंद्र जी के बारे में इतनी सारी बातें कैसे पता चलीं?

दादी माँ – मुझे ही नहीं वरन् सबको राम की कहानी 'रामचरितमानस' नाम की पुस्तक से पता चली। इसे 'गोस्वामी तुलसीदास' जी ने लिखा है।

रमन – अच्छा, तो मैं भी यह पुस्तक जरूर पढ़ूँगा।

दादी माँ – हाँ, जरूर पढ़ना। इसमें लिखी कहानी बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद है। इसे पढ़कर तुम्हें बहुत-सी अच्छी बातों का पता चलेगा। हमारे घर में यह पुस्तक है। मैं इसे रोज़ पढ़ती हूँ।

शब्द–अर्थ

चंगुल - जकड़; विशेष - खास; अधर्म - पाप; बल - शक्ति; उत्तम - श्रेष्ठ।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) राम के पास बल था–

(i) सैनिकों का ( ) (ii) सच्चाई का ( )

(ख) सहन करने से बढ़ती है–

(i) सहनशक्ति ( ) (ii) भक्ति ( )

(ग) राम को माता-पिता से प्राप्त था–

(i) धन-साधन ( ) (ii) आशीर्वाद ( )

(घ) व्यवहार उत्तम कहा जाएगा–

(i) प्रेम का ( ) (ii) चतुराई का ( )

2. कोष्ठक में से उचित शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

(क) रावण के भाई ..... थे। (धर्मात्मा/शक्तिशाली)

(ख) दादी माँ रोज़ ..... पढ़ती थी। (महाभारत/रामचरितमानस)

(ग) रामचरितमानस ..... जी ने लिखी है। (तुलसीदास/सूरदास)

(घ) जो अधर्म की राह पर चलेगा, वह ..... । (जीतेगा/हारेगा)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) दशहरा क्यों मनाया जाता है?

.....

.....

(ख) राम ने रावण को कैसे हरा दिया?

.....

.....

(ग) हमें किससे मुकाबला करना चाहिए?

.....

.....

(घ) रमन ने क्या पढ़ने का निश्चय किया?

.....

.....

भाषा की बात

1. पढ़ो और समान अर्थ वाले शब्दों को समझो–

(क) आशीर्वाद, दुआ, आशीष।

(ख) शक्ति, बल, ताकत।

(ग) माता, माँ, जननी।

(घ) प्रेम, प्यार, स्नेह।

2. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

(क) आशीरवाद – ..... (ख) अधरम – .....

(ग) शकती – ..... (घ) शीकशापरद – .....

3. निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से मिलान करो–

(क) युद्ध	(i) घृणा
(ख) प्रेम	(ii) दुर्बलता
(ग) शक्ति	(iii) श्राप
(घ) आशीर्वाद	(iv) बहन
(ङ) भाई	(v) शांति

कुछ करने के लिए

- सभी बच्चे मिलकर विद्यालय मंच पर रामलीला खेलो।

  इसके लिए निम्नलिखित सामान एकत्रित करो–

  (क) मुखौटे

  (ख) मुकुट

  (ग) तख्त

  (घ) कुर्सी जो सिंहासन बन सके

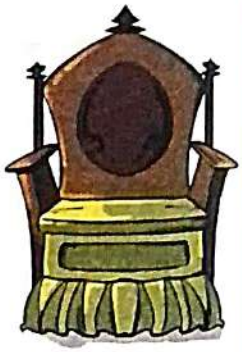

  (ङ) राजकुमारों, राजकुमारियों जैसे वस्त्र

  (च) मालाएँ

  (छ) धनुष-बाण

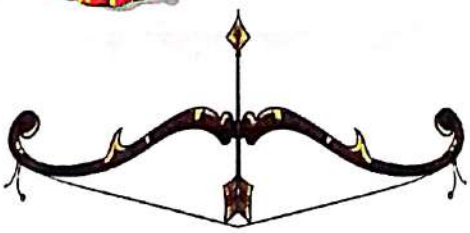

- आप भी रामचरितमानस की पुस्तक पढ़ो। इसके कुछ दोहे, चौपाई भी याद करो।

प्रश्न पत्र - II

(पाठ 1 से 7)

1. सही विकल्प पर ✓ लगाओ–

(क) निरंतर चलने वाला

(i) लक्ष्य भूल जाता है ( ) (ii) लक्ष्य पा लेता है ( )

(ख) प्रेम जहाँ रहता है वहाँ

(i) स्वर्ग होता है ( ) (ii) नरक होता है ( )

(ग) चंदा रात में आता है–

(i) देवों की सेना के साथ ( ) (ii) तारों की सेना के साथ ( )

(घ) जीवन को सजाने के लिए भाव होंगे–

(i) दया और क्षमा ( ) (ii) दंभ और पाखंड ( )

(ङ) अनुमान है कि पृथ्वी की उम्र है–

(i) पाँच अरब वर्ष ( ) (ii) डेढ़ अरब वर्ष ( )

2. किसने कहा–

(क) "मैं उस आग पर पानी बनकर बरस जाता हूँ।" .....

(ख) "हर वस्तु को टुकड़े-टुकड़े कर डालना मेरा काम है।" .....

(ग) "मैं भोजन से शक्ति बनाकर पूरे शरीर को देता हूँ।" .....

(घ) "अपराधी को प्रेम से सुधारा जा सकता है।" .....

(ङ) "मुझे सुबह-सुबह ठंडे पानी के छींटे दो।" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) जिसकी निंदा की जाती है, उसकी हालत कैसी हो जाती है?

(ख) बच्चा चाँद को कहाँ बुला रहा है?

(ग) धूल-मिट्टी से आँखो की रक्षा कौन करता है?

(घ) नए इतिहास में क्या खास होगा?

(ङ) वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?

4. **निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–**

(क)	प्रकाश	(i)	असत्य
(ख)	सत्य	(ii)	सज्जन
(ग)	खुशी	(iii)	मित्र
(घ)	दुष्ट	(iv)	दुख
(ङ)	शत्रु	(v)	अंधकार

5. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखो–**

(क) उसे बड़ी क्रोध आती है।

.....

(ख) हमें पक्षियों पर करुणा करना चाहिए।

.....

(ग) चूहा सबका नुकसान करती है।

.....

(घ) हमें किसी का अपमान नहीं करनी चाहिए।

.....

6. **निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यावाची लिखो–**

(क) सूरज – ....

(ख) चाँद – ....

(ग) पृथ्वी – ....

(घ) आसमान – ....

7. **निम्नलिखित का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–**

(क) सुगंध फैलाना – .....

(ख) पूजनीय – .....

(ग) आदरणीय – .....

(घ) नाम रोशन करना – .....

8. **निम्नलिखित शब्दों में से बेमेल शब्दों पर गोला (◯) बनाइए–**

(क) लाल, हरा, धानी, बाल।

(ख) नहाना, रोना, पकाना, धोना।

(ग) चावल, नमक, दाल, रोटी।

(घ) आम, सेब, अंगूर, दातुन।

प्रश्न पत्र - II

(पाठ 8 से 15)

1. सही विकल्प पर ✓ लगाओ–

(क) राजाओं के सिरों पर बैठता है–

(i) हीरा ( ) (ii) कोयला ( )

(ख) किसान ने लोरीकीट को पिंजरे से निकालकर बंद कर दिया–

(i) घड़े में ( ) (ii) डिब्बे में ( )

(ग) हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए–

(i) जिससे दूसरे भड़के ( ) (ii) जिससे दूसरे को शीतलता मिले ( )

(घ) चींटियाँ रात-दिन करती हैं–

(i) आराम ( ) (ii) काम ( )

(ङ) सिंड्रेला नौकरानी से बनी–

(i) राजकुमारी ( ) (ii) सेठानी ( )

2. सत्य कथन पर ✓ तथा असत्य कथन पर ✗ लगाओ–

(क) लोरीकीट ने अदालत में जानबूझकर झूठ कहा। ( )

(ख) लोरीकीट की सीख को तोते ने ध्यान से सुना। ( )

(ग) नेहरू जी पहाड़ों पर अपने चचेरे भाई के साथ घूमते रहे। ( )

(घ) दरारों के होने से यात्रा में कोई परेशानी नहीं हुई। ( )

(ङ) चींटियाँ चुस्त होती हैं। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) हीरे ने अपनी कौन-कौन सी विशेषताएँ बताई?

(ख) सुगंध से खुश होकर रोहित ने दादाजी से क्या पुछा?

(ग) आज का काम कल पर क्यों नहीं टालना चाहिए?

(घ) सिंड्रेला की माँ व बहनें उससे कैसा व्यवहार करती थीं?

(ङ) दशहरा क्यों मनाया जाता है?

4. पाठ में आए इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

(क) छोटा मुँह बड़ी बात – .....

(ख) मारा-मारा फिरना – .....

(ग) पानी फेरना – .....

(घ) एक सूत्र में बाँधना – .....

(ङ) सिर नीचा करना – .....

5. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन लिखो–

(क) बोली – .....

(ख) लोककथा – .....

(ग) शाखा – .....

(घ) युक्ति – .....

(ङ) घड़ा – .....

(च) कपड़ा – .....

(छ) घटना – .....

(ज) रात – .....

(झ) किस्सा – .....

(ञ) वस्ती – .....

6. निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से मिलाओ–

(क) शीतल	(i) पुण्य
(ख) पाप	(ii) सच
(ग) आज	(iii) दुख
(घ) झूठ	(iv) कल
(ङ) सुख	(v) गर्म

7. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग लिखो–

(क) नौकर – .....

(ख) भाई – .....

(ग) राजकुमार – .....

(घ) बेटा – .....

(ङ) चूहा – .....

(च) घोड़ा – .....

8. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

(क) आशीरवाद – .....

(ख) अधरम – .....

(ग) शकती – .....

(घ) शीकशापरद – .....